जीवन की पहेली

(भजन संग्रह)

प्रकाशक
धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
सागर (म.प्र.)

कृति	:	जीवन की पहेली
संस्करण	:	पंचम, जनवरी 2013
आवृत्ति	:	1100
मूल्य	:	25/-
प्राप्ति स्थान	:	धर्मोदय परीक्षा बोर्ड जैन मंदिर के पास बाहुबली कॉलोनी, सागर (म.प्र.) 094249-51771 dharmodayat@gmail.com
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

अपनी भक्ति को प्रदर्शित करने का एक माध्यम भजन है। भजन जहाँ आत्मोन्नति में साधक हैं, वहीं वातावरण को मधुरिम बनाते हैं।

प्रस्तुत कृति 'जीवन की पहेली' में अनेक रचनाकारों के द्वारा रचित 158 भजनों का संकलन किया गया है। इसका उद्देश्य आबालवृद्ध की भक्ति को प्रगाढ़ बनाना है, जिससे वे अपने नैतिक-आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ प्राणिमात्र के कल्याण में संलग्न हो सकें।

जिन रचनाकारों के भजनों का संकलन किया है, उन सभी का हृदय के गहनातिगहन तल से आभार ज्ञापित करते हैं।

अनुक्रम

1.	अपने पारस	7
2.	उठ जाग मुसाफिर	8
3.	मीठो-मीठो बोल	9
4.	जिस भजन में गुरु	10
5.	नदिया न पिये	11
6.	मैंने तेरे ही भरोसे	12
7.	विद्यासागर नाम	12
8.	दुनिया में सबसे	13
9.	सदा संतोष कर	14
10.	भगवान तुम्हें मैं खत	15
11.	हे प्रभु आनंददाता	15
12.	काया की काठी	16
13.	इस जनम में	17
14.	रोम-रोम से	18
15.	मंत्र जपो नवकार	19
16.	जीवन है पानी की	20
17.	मेरे विद्यासागर	21
18.	मात पिता और	22
19.	अम्मा,अम्मा	23
20.	आँखें बंद करूँ	24
21.	हे वीर तुम्हारे	25
22.	जीवन के राही रे	26
23.	बड़े बाबा तेरे	27
24.	पाना नहीं जीवन	28
25.	जीते लकड़ी	29
26.	दुनिया में ऐसा	30
27.	श्री विद्यासागर	31
28.	जब कोई नहीं आता	32
29.	गुरुवर पनाह में	33
30.	कल भी मन अकेला	33
31.	इतनी शक्ति हमें	34
32.	प्रभो दर्श कर	35
33.	मन की तरंगे	36
34.	नाम जब से	37
35.	कभी तो ये बाबा	38
36.	धरती की शान है	39
37.	बहती ज्ञान की धार	40
38.	चरणों में नमन	41
39.	मेरे भगवान्	42
40.	हे प्रभो जिनदेव	43
41.	यह संसार सागर	44
41.	चलो चिड़िया हुआ	45
43.	विद्यासागर गुरु हमारे	46
44.	कैसा शुभ दिन आया	47
45.	धीरे-धीरे चलो जी	48
46.	गुरु तू न मिला	49
47.	गुरुवर तेरे चरणों की	50
48.	सुबह और शाम को	51
49.	ढोल बजा के बोल	52
50.	उड़ा जा रहा	53
51.	जिया कब तक	54
52.	करता रहूँ गुणगान	55
53.	ये सागर से गहरे	56
54.	प्रभु नाम जपने से	57
55.	करले आतम का	58
56.	ॐ मंगलं ओंकार	59
57.	आज हम जिनराज	60
58.	चलो चलो सखी	60
59.	बेला अमृत गया	61
60.	अपने घर को देख	62
61.	हे पंच परम पद धारी	63
62.	मुझे ऐसा वर दे दे	64
63.	छुक-छुक-छुक	65
64.	आत्म शक्ति से ओत	66
65.	कैसे अदा करेंगे	67
66.	जिस जिस को	68
67.	चेतो चेतो चतुर	69
68.	सुन चेतन ज्ञानी	70
69.	बड़ेबाबा बिना	71
70.	मेरे अर्हत् पावन है	72
71.	आगे आगे अपनी	73
72.	थोड़ा ध्यान लगा	74
73.	बिन तेरे गुरुवर मेरा	75
74.	गुरुदेव मेरे तुमको	76

75. आपके दर्शन पाकर 77
76. तुम्हीं हो माता 77
77. चाह यही है 78
78. तूने मानव जीवन 79
79. जाने वाले एक 80
80. चंद दिनों का जीना 81
81. तुम्हारे दर्श बिन 82
82. स्वर्ग से सुंदर 83
83. कर तू प्रभु का 84
84. व्यर्थ हर पल 85
85. दुनिया में रहने वाले 86
86. जय बोलो जय 87
87. करना मन ध्यान 88
88. लिखा है ऐसा लेख 89
89. जीवन है दीपक की 90
90. है दीक्षा का ये दिन 91
91. जिनशासन के उपकारी 92
92. भव सागर में दुख न 93
93. मोह जाल में फँसे 94
94. जिनका पावन दर्शन 95
95. दुःख से घबराओ 96
96. जिन धर्म के प्यारे 97
97. जहाँ नेमि के चरण 98
98. नाम तिहारा तारण 99
99. प्राणी रंगसु तरंग 100
100. समकित से कब 101
101. नर तन रतन 102
102. ओ प्यारे परदेसी 103
103. ममता की पतवार 104
104. जिनधर्म है आदि 105
105. अब सौंप दिया 106
106. आये हैं हम अकेले 107
107. आये हो मेरी इस धरा 108
108. जिनवर जिनवर 109
109. मेरी साधना के सुर 110
110. जिसको तू खोज रहा 111
111. झूठी दुनियाँ से मन 112
112. जिन्दगी सुधार बन्दे 113
113. हम तो कबहूँ न 113
114. भगवन्त भजन 114
115. साधना के रास्ते 114
116. हम यही कामना 115
117. पंखिड़ाऽऽ पंखिड़ा 116
118. ओ मेरे गुरु वर परम 117
119. चारों गतियों में 118
120. ओ पालन हारे 119
121. कंकड़ पत्थर गले 120
122. गुरुदेव की कृपा से 121
123. टिक टिक सुना 122
124. कितना सुंदर तेरा 123
125. पलकें ही पलकें 124
126. मेरे सपनों में 125
127. मेरे सर पे रख दो 126
128. मन में तुम्हें बसा 127
129. बड़े बाबा मेरे 128
130. मैली चादर ओढ़ 129
131. कुदरत ने शिखर जी 130
132. मुझे चरणों में 131
133. हे मुनिवर धन्य हो 132
134. जीवन के किसी भी 133
135. जाएगा जब जहाँ से 134
136. इस योग्य हम कहाँ 135
137. कंकर कंकर बन 136
138. नाचे जो मन को 137
139. गहरी-गहरी नदिया 138
140. दुनियाँ में गुरु 139
141. सब मिल के आज 139
142. कुछ पल की 140
143. अरिहंत देव स्वामी 141
144. ओ जगत के शांति 142
145. कोई लाख करे 143
146. मुखड़ा देख ले 143
147. पिंजरे के पंछी रे 144
148. हमने जग की 144
149. क्या तन मांजना रे 145
150. तू परम रस पायेगा 146
151. जैसे सूरज की 147
152. तेरे द्वार खड़ा 148
153. है ये पावन भूमि 148
154. दुख से घबराओ 149
155. जो राह चुनी तूने 150
156. चाह मुझे है दर्शन 151
157. करुणासागर 152
158. मोक्ष पद मिलता 152

1.

जीवन की पहेली सुलझाने आया हूँ।
अपने पारस बाबा को मनाने आया हूँ॥
अपने पारस.....॥
संकटों के घेरे चारों ओर प्रभु मेरे हैं।
मेरी जिंदगानी में अंधेरे ही अंधेरे हैं॥
आशाओं का दीप जलाने आया हूँ॥
अपने पारस.....॥
तेरे दरबार में दया की बरसात है।
मेरी लाज बाबाजी तुम्हारे ही तो हाथ है॥
आशाओं का सूरज उगाने आया हूँ॥
अपने पारस.....॥
सारे प्रश्नों के यहाँ उत्तर मिल जाते हैं।
रोते-रोते आने वाले हँसते-हँसते जाते हैं॥
भक्ति की आस जगाने आया हूँ॥
अपने पारस.....॥
दुनिया की रीत कोई दुःख नहीं बाँटे।
मेरी तो डगर में हैं काँटे ही काँटे॥
नाव पार अपनी लगाने आया हूँ॥
अपने पारस.....॥

2.

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है॥
उठ नींद से अखियाँ खोल जरा-अपने प्रभुवर से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत हैं तू सोवत है॥
उठ जाग.....॥
जो कल करना वह आज करो, जो आज करे वह अब कर लो
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया, तब पछताये क्या होवत है॥
उठ जाग.....॥
हर पल, हर क्षण, हर दिन, अपना, प्यारा जीवन ढलता जाये।
रखना विवेक हर दम प्राणी, मूरख नर पीछे रोवत है॥
उठ जाग.....॥
अब जान भुगत अपनी करनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीश धरी, फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है॥
उठ जाग.....॥

सच्ची भक्ति ही तो हमको सच्चा भक्त बनाती है।
सच्चा भक्त बनाकर, फिर आशीर्वाद दिलाती है॥
आशीर्वाद दिला करके, केवलज्ञान दिलाती है।
केवलज्ञान दिला करके ,शिवमंजिल पहुँचाती है॥

3.

मीठो-मीठो बोल थारो काँई बिगड़े।
काँई बिगड़े थारो काँई बिगड़े॥
वीरा वीरा बोल थारो काँई बिगड़े।
काँई बिगड़े थारो काँई बिगड़े॥
आ जीवन मा दम नहीं।
कब निकले प्राण मालूम नहीं॥
मीठो-मीठो बोल.....॥
सोच समझ ले स्वारथ रो संसार।
लाख जतन कर छूटेला घर बार॥
तू जान ले पहचान ले मारी मान ले ।
संसार किसी का घर नहीं ॥
कब निकले प्राण मालूम नहीं॥
मीठो-मीठो बोल.....॥
युग-युग से गुरु कहते बारंबार।
एक बार तू कर ले मन में विचार॥
तू चेत जा, तू जान जा, पहचान जा।
संसार किसी का घर नहीं ॥
कब निकले प्राण मालूम नहीं॥
मीठो-मीठो बोल.....॥

4.

जिस भजन में गुरु का नाम न हो, उस भजन को गाना नहीं चहिये।
जिस जगह में गुरु के चरण न हो,उस जगह में जाना नहीं चहिये॥

जिस माँ ने हमको जन्म दिया,उसे कभी भुलाना न चहिये।
जिस पिता ने हमको पाला है, उसे कभी सताना न चहिये॥

चाहे गरीबी कितनी ज्यादा हो, प्रभु नाम भुलाना न चहिये।
चाहे अमीरी कितनी ज्यादा हो, अभिमान दिखाना न चहिये॥

चाहे लड़का कितना अच्छा हो, उसे सिर पे बैठाना न चहिये।
चाहे बिटियाँ कितनी सुन्दर हो, उसे घर-घर घुमाना न चहिये॥

चाहे भैय्या कितना बैरी हो, उसे हाथ उठाना न चहिये।
अपने घर की बातों को, कभी बाहर सुनाना न चहिये॥

जिस सभा में अपना मान न हो,उस सभा में जाना न चहिये।
जिस विषय में खुद को ज्ञान न हो, उसे कभी बताना न चहिये॥

सैंकड़ों दर्दमंद मिलते हैं।
काम के लोग चन्द मिलते हैं॥
जब जरूरत का वक्त आता है।
तो सबके दरवाजे बंद मिलते हैं॥

5.

नदिया न पिये कभी अपना जल,
वृक्ष न खाये कभी अपने फल।
अपने तन का मन का धन का,
दूजों को दे जो दान है॥
वो सच्चा इंसान है,
इस धरती का भगवान है॥

अगर सा जिसका अंग जले,
और दुनिया को मीठी साँस दे।
दीपक सा उसका जीवन है,
जो दूजो को अपना प्रकाश दे।
धर्म है जिसका श्री जिनवाणी,
सेवा ही वेद पुराण है॥
वो सच्चा.....॥
चाहे कोई गुणगान करे या,
चाहे करे निंदा कोई।
फूलों से कोई सत्कार करे या,
कांटा चुभो जाये कोई।
मान और अपमान भी दोनों,
जिसके लिए समान हैं....॥
वो सच्चा.....॥

6.

मैंने तेरे ही भरोसे आदिनाथ, सागर में नैया डार दई।
काहे की तोरी नबरिया, काहे की पतवार॥ टेक॥
को है यामै बैठन हारौ, को है खेवनहार॥

धरम की मेरी नाव नबरिया, समकित की पतवार।
आतम यामै बैठन हारौ, तू है खेवन हार॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचरन तप ये आराधन चार।
ये ही सार असार और सब ये निजचित में धार॥

अरे जीव भव वन विषै तेरा कौन सहाय।
काल सिंह पकरै तुझे, तब को लेत बचाय॥

7.

विद्यासागर नाम हमें प्राणों से भी प्यारा है।
एक तेरा नाम, मेरे जीवन का सहारा है॥
विद्यासागर नाम.....॥
एक बार ये भोजन लेते, एक बार ये पानी,
आ जाये अंतराय तो भैय्या, न भोजन न पानी,
ऐसे गुरुवर के चरणों में शत शत नमन हमारा है।
विद्यासागर नाम.....॥
एक हाथ में पीछी लेते, एक हाथ में कमण्डल,
जहाँ जहाँ ये गुरुवर जाते, प्रेम के दीप जलाते,
ऐसे गुरुवर के चरणों में शत शत नमन हमारा है।
विद्यासागर नाम.....॥

8.

दुनिया में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा,
सब देखन जानन हारा, यह आत्मा हमारा॥
टेक.....॥
यह जले नहीं अग्नि में, भींगे न कभी पानी में।
सूखे न पवन के द्वारा, यह आत्मा हमारा॥
दुनिया में .....॥
शस्त्रों से कटे न काटा, नहिं तोड़ सके कोई भाटा।
मरता न मरी का मारा,यह आत्मा हमारा॥
दुनिया में .....॥
माँ बाप सुता सुत नारी, झूठे झगड़े संसारी।
नहिं देता कोई सहारा, यह आत्मा हमारा॥
दुनिया में .....॥
मत फँसे मोह ममता में, मक्खन आजा आपा में।
तन धन कछु नाहि तुम्हारा,यह आत्मा हमारा॥
दुनिया में .....॥

खींच पाओ तो मधुर व्यवहार से खींचो।
सींच पाओ तो हृदय की धार से सींचो॥
तलवार की जीत से तो हार अच्छी है।
जीत पाओ तो मनुष्य को प्यार से जीतो॥

9.

सदा संतोष कर प्राणी, अगर सुख से रहा चाहे,
घटा दे मन की तृष्णा को, अगर अपना भला चाहे।

आग में जिस कदर ईंधन, पड़ेगा ज्योति ऊँची हो,
बढ़ा मत लोभ की तृष्णा, अगर दुख से बचा चाहे॥

वही धनवान है जग में, लोभ जिसके नहीं मन में,
वह निर्धन रंक होता है, जो परधन को हरा चाहे॥

दुःखी रहते हैं वह निशदिन, जो आरत-ध्यान करते हैं,
न कर लालच अगर आजाद, रहने का मजा चाहे॥

बिना मांगे मिले मोती, 'न्यामत' देख दुनियाँ में,
भीख मांगे नहीं मिलती, अगर कोई गहा चाहे॥

अफसोस मूढ़ मन तू मुद्दत से सो रहा।
सोचा ये न कि घर में अंधेरा हो रहा॥
चौरासी लाख योनी तय कर मुश्किल से।
जिस घर को तूने ढूंढा उस घर को खो रहा॥

10.

भगवान तुम्हें मैं खत लिखती पर पता मुझे मालूम नहीं।
मैंने बाग में पूछा माली से और खेत में पूछा हाली से।
हाली ने कहा-2 इस मिट्टी में, पर पता मुझे मालूम नहीं।
भगवान.....॥
मैंने चाँद से पूछा सूरज से, और पूछा गगन के तारों से ।
तारों ने कहा-2 इस अम्बर में, पर पता मुझे मालूम नहीं।
भगवान.....॥
मैंने गंगा से पूछा यमुना से, और पूछा गहरे सागर से ।
सागर ने कहा-2 इस पानी में पर पता मुझे मालूम नहीं।
भगवान.....॥

11.

हे प्रभु आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें।
प्रेम से हम गुरुजनों की, नित्य ही सेवा करें।
सत्य बोलें, झूठ त्यागें, मेल आपस में करें।
निंदा किसी की हम किसी से, भूलकर भी ना करें।
धैर्य बुद्धि मन लगाकर ईश गुण गाया करें।

12.

काया की काठी,आत्मा का घोड़ा
आत्मा पे मारा जो ज्ञान का हथौड़ा
दौड़ा दौड़ा दौड़ा दौड़ा मुनि शरण में दौड़ा
गुरुवर गुरुवर गुरुवर गुरुवर

मिले गुरु ज्ञानी बोले मृदु वाणी
सत्य अहिंसा पालन कर, जीवों पर तू दया कर
सत्यम् सत्यम् सत्यम् सत्यम्
काया की काठी.....॥

प्रभु देना शक्ति, करूँ तुम्हारी भक्ति
जिनमंदिर में जाऊँगा, प्रभु को शीश झुकाऊंगा
अरिहंत अरिहंत अरिहंत अरिहंत
अरिहंत बोलो आत्मा,सिद्ध बोलो आत्मा
काया की काठी.....॥

जब अपना मन पवित्र होता है।
हर चेहरे पर अपना चित्र होता है॥
फिर दुनिया में तुम कहीं भी चले जाओ।
जो मिलता है अपना ही मित्र होता है॥

13.

इस जनम में न सही पर भव में मिलता है।
अपने अपने कर्मों का फल सबको मिलता है॥
एक फूल वो है जो वेदी पर चढ़ता है।
एक फूल वो है जो अर्थी पर चढ़ता है।
फूल दोनों एक ही बगिया में खिलते हैं॥
अपने अपने कर्मों.....॥

एक पत्थर वो है जिसकी मूरत बनती है।
एक पत्थर वो है जिसकी सड़के बनती हैं।
पत्थर दोनों एक ही खानों में मिलते हैं॥
अपने अपने कर्मों.....॥

एक भाई वो है जो तीर्थंकर बनता है।
एक भाई वो है जो नरकों में जाता है।
भाई दोनों एक ही माँ से जन्में हैं॥
अपने अपने कर्मों.....॥

एक बहिन वो है जो आर्यिका बनती है।
एक बहिन वो है जो गृहस्थी में फंसती है ।
दोनों बहिन एक ही माँ से जन्मी हैं॥
अपने अपने कर्मों.....॥

14.

रोम-रोम से निकले प्रभुजी नाम तुम्हारा-2
ऐसा दो वरदान कि फिर न पाऊँ जनम दुबारा॥
रोम-रोम से.....॥
छोड़ न पाऊँ प्रभुजी, पाँच ठगों का डेरा।
किस विध आखिर पाऊँ, दर्शन प्रभुजी तेरा॥
भटक न जाये ये बालक, प्रभु देना आप सहारा,
रोम-रोम से.....॥
दिल से निश दिन प्रभुजी, ज्योति जलाऊँ तेरी,
कब तक मन की होगी, पूरी आशा मेरी।
इन नैनों से, तेरी ज्योति का, देखूँ अजब नजारा,
रोम-रोम से.....॥
कोई न खाली जाये, तेरे दर से प्रभुजी,
अपनी दया का हाथ तू, सर पे रख दे प्रभुजी।
तेरे दर पर आये हैं, पाने दीदार तुम्हारा,
रोम-रोम से.....॥

पुरुषार्थ हैवान को इन्सान बना देता है।
संघर्ष तो जीवन को महान बना देता है॥
पुरुषार्थ शिल्पी का अरे कितना अनोखा है।
पुरुषार्थ पाषाण को भगवान बना देता है॥

15.

मंत्र जपो णमोकार मनवा, मंत्र जपो णमोकार।
पाँच पदों के पैतीस अक्षर, है सुख के आधार॥
हो मनवा, हैं सुख के आधार। मंत्र .....

अरिहन्तों का सुमिरन करले
सिद्ध प्रभु का नाम तू जपले
आचार्य हैं सुखकार, रे मनवा,
मंत्र जपो णमोकार.....॥

उपाध्याय को मन से ध्याले,
सर्व साधु को शीश नवाले.....
होवे भव से पार, रे मनवा,
मंत्र जपो णमोकार.....॥

धनहीन सुख सम्पत्ति पावे
मन वांछित हर काम बनावे
सुखी रहे परिवार, रे मनवा,
मंत्र जपो णमोकार.....॥

रोग शोक को दूर भगावे
जन्म जरामृत रोग मिटावे
भव दुख भंजन हार, रे मनवा,
मंत्र जपो णमोकार.....॥

16.

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे.....
होनी अनहोनी हो-हो[2] कब क्या घट जाये रे.....
जीवन है पानी.....

पर को अपना मान रहे, अपना नहीं हम जान रहे-2
अपना-अपना हुआ नहीं, सपना अपना हुआ नहीं-2
पर में क्यों अपना हो-हो[2], तू धर्म मिटाये रे.....
जीवन है पानी.....

जितना भी कर जाओगे, उतना ही फल पाओगे-2
करनी जो कर जाओगे, वैसा ही फल पाओगे-2
नीम के तरु में हो-हो[2], नहिं आम दिखाये रे.....
जीवन है पानी.....

चंद दिनों का जीवन है, इसमें देखो सुख कम है-2
जन्म सभी को है मालूम, लेकिन मृत्यु से गाफिल है-2
जाने कब तन से हो-हो[2], पंछी उड़ जाये रे.....
जीवन है पानी.....

किसको माने अपना है, अपना भी तो सपना है-2
जिसके लिए माया जोड़ी, क्या वो तेरा अपना है-2
तेरा ही बेटा हो-हो[2], तुझमें आग लगाये रे.....
जीवन है पानी.....

गुरुवर दया की मूरत हैं, प्रभुवर की ये सूरत हैं-2
मोक्ष का कार्य शुरु करने, सबसे शुद्ध मुहूरत है-2
फिर क्यों तू अब भी हो-हो[2], यहाँ देर लगाये रे.....
जीवन है पानी.....

17.

मेरे श्री विद्यासागर दे दो आसरा।
आप ही दिखा दो मुझे भूला रास्ता॥

दीन दुखियों के सपनों की तकदीर हो।
इस नये दौर के आप महावीर हो॥
आपसे पड़ा है मुझे फिर वास्ता।
आप ही दिखा दो.....॥

पूजनीय वंदनीय आप संतों में।
आन पड़े हम तेरे चरणों में॥
पापियों ने देखो कैसा किया माजरा।
आप ही दिखा दो.....॥

भावनाओं के तुम एक आकाश हो।
जिसका कोई नहीं उसके विश्वास हो।
भक्तों को जुड़ी है गुरुवर तुमसे आस्था॥
आप ही दिखा दो.....॥

गुरुवर विद्यासागर जी हो, पंचम युग में हितकारी।
संकट में जो विषम विश्व के, जीवों के मङ्गलकारी॥
प्रेम सुधा मकरन्द लुटाते, सबके मन को हरते हो।
आज समय में समयधार बन, समय-सार को वरते हो॥

18.

मात पिता और गुरु चरणों में प्रणमत बारंबार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार॥

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाय चुकाया।
उंगली पकड़ कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया॥
जिनकी गोद में पलकर हम कहलाते हैं होशियार.....॥
हम पर किया.....॥
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया।
पढ़ा लिखा कर गुणवान बनाया,जीवन पथ पर चलना सिखाया
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार.....॥
हम पर किया.....॥
तत्त्व ज्ञान गुरु ने दर्शाया, अंधकार को दूर हटाया।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, प्रभु दर्शन का मार्ग बताया
बिना स्वार्थ ही किया करें, ये तीनों बड़े उदार.....॥
हम पर किया.....॥

धुराधार वात्सल्यमयी तुम, हम सबका परित्राण करो।
महासमर को क्षण में रोको, सत्य धर्म जय नाद करो॥
उपदेशों से गुरुवर तेरे, विश्व नाश से बच सकता।
जिनवर जैसी सूरत लखकर, युग प्रकाश में आ सकता॥

19.

अम्मा, अम्मा, मुझको, मुझको।
इक छोटा सा कलशा दिला दो न ।
कलश भरुँगा अभिषेक करुँगा॥
अम्मा.....॥
इक छोटी सी पुस्तक दिला दो न ।
पुस्तक पढ़ूँगा,स्वाध्याय करुँगा॥
इक छोटी सी थाली दिला दो न।
थाली सजाऊंगा,पूजा रचाऊंगा॥
अम्मा.....॥
इक छोटी सी आरती दिला दो न।
आरती करूँगा ,भक्ति रचूँगा॥
इक छोटी सी माला दिला दो न।
जाप करूँगा, पुण्य कमाऊँगा॥
अम्मा.....॥
इक छोटी सी साइकिल दिला दो न।
साइकिल चलाऊँगा,पाठशाला जाऊँगा॥
इक छोटी सी कटोरी दिला दो न ।
चंदन रखूँगा,तिलक लगाऊँगा॥
अम्मा.....॥
इक छोटी सी पिच्छी दिला दो न ।
पिच्छी लेकर,दीक्षा लूंगा,साधना करूँगा॥
इक छोटा सा कमण्डलु दिला दो न ।
कमण्डलु भरूँगा,चर्या करूँगा॥
अम्मा.....॥

20.

आँखें बंद करूँ या खोलूँ मुझको दर्शन दे देना।
दर्शन दे देना प्रभुजी दर्शन दे देना-2

मैं नाचीज हूँ बंदा तेरा तू सबका दातार है-2
तेरे हाथ में सारी दुनियाँ मेरे हाथ में क्या है॥
करूँ साधना ऽऽऽ 2 मुझको ऐसा साधन दे देना ॥
आँखें बंद करूँ.....॥
तेरा मेरा नाता ऐसा रिश्ता है सदियों का।
जैसे कोई नाता होना सागर से नदियों का॥
तुझको देखूँ ऽऽऽ 2 मुझको ऐसा दर्शन दे देना॥
आँखें बंद करूँ.....॥
मेरी माँग बड़ी साधारण मन में आके रहियो 2
हर एक सांस के पीछे अपनी झलक दिखाते रहियो।
नाम जपूँ ऽऽऽ 2 मुझको ऐसे धड़कन दे देना॥
आँखें बंद करूँ.....॥

कमान से छूटा तीर कभी वापस नहीं आता।
आँखों से गिरा नीर कभी वापस नहीं आता॥
समय सोने से भी अधिक मँहगा है साथियो।
बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता॥

21.

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, इक दरश भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है॥
नहीं दुनियाँ में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है, जग ने मुझको ठुकराया है॥
हे वीर तुम्हारे द्वारे..... ॥
धन दौलत की कछु चाह नहीं, परिवार छुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा है प्रभु दर्शन की दुनियाँ से चित्त घबराया है॥
हे वीर तुम्हारे द्वारे..... ॥
मेरी बीच भंवर में नैया है, प्रभु तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भवसिंधु से पार उतारा है॥
हे वीर तुम्हारे द्वारे..... ॥
आपस में प्रेम व प्रीत नहीं, तुम बिन अब हमको चैन नहीं।
अब तो तुम आकर दर्शन दो, त्रिलोकीनाथ अकुलाया है॥
हे वीर तुम्हारे द्वारे..... ॥

कल का दिन देखा किसने।
आज का दिन खोय क्यों ?
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं।
उन घड़ियों में रोय क्यों॥

22.

जीवन के राही रे, रुको नहीं हार के।
एक-एक पग अपना रखना सम्भाल के॥
ऊँची नीची काँटों भरी, जीवन की गलियाँ।
मुरझा न जाएँ देखो, भव-भव की कलियाँ॥
धीरज न खोना कभी संकट के द्वार पे॥
एक-एक पग..... ॥

नर तन मिला है हमको, बड़े ही कठिन से।
इसको संभालो भैय्या, ऐसे जतन से॥
सबका मन जीतो अपने, सुंदर व्यवहार से॥
एक-एक पग..... ॥

हिंसा झूठ चोरी छोड़ो, छोड़ो मायाचारी।
व्यर्थ न जाने पाएं, घड़ियाँ तुम्हारी॥
बनके पुजारी प्रभु के, मोक्ष सुख पायके॥
एक-एक पग..... ॥

कंटकों में राह बनाना सीखो।
संकटों में रहकर मुस्कराना सीखो॥
सचमुच जिंदगी सुखमय लगेगी।
बस दूसरों के काम आना सीखो॥

23.

बड़े बाबा तेरे दर पे हम भक्ति लिए आए।
हमें पार करो बाबा यह आश लिए आए॥
इस भव वन के भीतर मुझे शांति नहीं मिलती,
तेरी छवि को देखो तो, बस शांति ही है दिखती-2
ये क्रांति सभी छूटे, चरणों में तेरे आए।
हमें पार करो बाबा, यह आश लिये आए॥
बड़े बाबा.....॥
प्रभुवर तेरी भक्ति से, सब संकट टलते हैं।
हम भी शुभ भावों से, तेरी भक्ति करते हैं-2
मेरे अष्ट कर्म छूटे, यह भाव लिए आए।
हमें पार करो बाबा यह आश लिए आए॥
बड़े बाबा.....॥
तुम देवों के देवा हो, सबसे बड़े बाबा।
तुम शांति सुधा समता सद् विद्या के दाता-2
रत्नत्रय निधि दीजे, यह आश लिए आए।
हमें पार करो बाबा, यह आश लिए आए॥
बड़े बाबा.....॥

रोने से कम होता है ये गम।
तो दुःख में बेशक रो लो तुम॥
किन्तु मुस्करा कर जीने वालों को।
सुखी मत समझ लेना तुम॥

24.

पाना नहीं जीवन को बदलना है साधना।
धुएँ-सा जीवन मौत है जलना है साधना॥

मूड मुड़ाना बहुत सरल है मन मुंडन आसान नहीं।
व्यर्थ भभूत लगाना तन पर यदि आतम का ज्ञान नहीं॥
पर की पीड़ा में मोम सा-2 पिघलना है साधना,
पाना नहीं.....॥
मंदिर में हम बहुत गये पर मन ये मंदिर नहीं बना।
व्यर्थ शिवालय में जाना जो मन शिव शंकर नहीं बना॥
पल-पल समता में इस मन का-2 ढलना है साधना,
पाना नहीं.....॥
सच्चा पाठ तभी होगा जब जीवन में परायण हो।
श्वास-श्वास धड़कन-धड़कन में जुड़ी हुई रामायण हो॥
सत् पथ पर जन-जन का-2 चलना है साधना,
पाना नहीं.....॥

जिनकी मुट्ठी में पल नहीं होते।
उनके कभी कल नहीं होते॥
दर्द अपना बाँटने की न सोच।
लोग इतने सरल नहीं होते॥

25.

जीते लकड़ी मरते लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।
दुनियां वालो तुम्हें दिखायें, ये जगपाशा लकड़ी का॥

जिस दिन तेरा जन्म हुआ था, पलंग बना था लकड़ी का।
तुझे झूलने को मंगवाया, एक पालना लकड़ी का॥

गलियों में जब गया खेलने, गुल्ली डण्डा लकड़ी का।
गया पाठशाला पढ़ने जब तख्ती कलम था लकड़ी का॥

तुझे पढ़ाने को शिक्षक ने भय दिखलाया लकड़ी का।
पढ़ लिख कर जब ब्याहन चाला, रेल का डिब्बा लकड़ी का॥

सासूजी के दरवाजे पर, तोरण और पटड़ा था लकड़ी का।
फेरों को जो मढ़ा गढ़ा था, बना हुआ था लकड़ी का॥

गृहस्थ बनकर घर पर आया, फिकर हुआ फिर नून तेल लकड़ी का।
बूढ़ा हुआ जब अरे तू निर्मल, लिया हाथ लट्ठ लकड़ी का॥

अरथी भी तेरी लकड़ी की और चिता बनी थी लकड़ी की
जीते लकड़ी मरते लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।

26.

दुनिया में ऐसा कहाँ, सबका नसीब है।
कोई-कोई अपने, गुरु के करीब है॥

कोई बुझावे चाहे दीपक सारे।
गुरु ही दिखाये आके राह में तारे॥
गुरु हो करीब तो, उसका नसीब है॥
दुनिया में.....॥

आँख भरी है मेरी, पथ अंधियारा।
राह न सूझी तो, दे दो सहारा॥
पास हो माँझी तो, किनारा करीब है॥
दुनिया में.....॥

गुरु तुम छोड़ के आये, दुनिया के रिश्ते।
हमको निकालो गुरुवर, दल-दल के बीच से॥
मेरे हृदय में गुरु, भक्ति का संगीत है॥
दुनिया में.....॥

कुछ लोगों की कुछ बातों में, बस अन्तर इतना होता है।
कुछ दिल में उतर जाते हैं, कुछ दिल से उतर जाते हैं॥

27.

श्री विद्यासागर जी गुरुवर हमारे,
संसार सिंधु के तुम हो किनारे।
तू ज्ञान सागर की पहली लहर है,
जाना कहाँ है ये तुमको खबर है।
हमको भी ले चल मुक्ति की मंजिल,
जीवन की नैया है तेरे सहारे।
श्री विद्यासागर.....॥

तुम वीतरागी हो वैराग्यदायी,
श्री जैन शासन की महिमा बताई।
लाखों को तारा हमने पुकारा,
आवाज सुन लो गुरुवर हमारे।
श्री विद्यासागर.....॥

तुम हो अहिंसा धर्म के मसीहा,
तुम स्वाती की बूँद मैं हूँ पपीहा।
हमको पिला दो हमको जिला दो,
अध्यात्म अमृत वचन ये तुम्हारे।
श्री विद्यासागर.....॥

सम्यक्त्व समता के आलय तुम्हीं हो,
माँ भारती के हिमालय तुम्हीं हो।
पथ तुमसे पावन उपकारी जीवन,
हम अश्रु जल से चरणा पखारें।
श्री विद्यासागर.....॥

28.

जब कोई नहीं आता बड़े बाबा आते हैं।
मेरे दुख के दिनों में वो बड़े काम आते हैं।
बाबा मेरी पीड़ा पहचान जाते हैं॥
मेरे दुख के.....॥

मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती।
किसी और की अब मुझको, दरकार नहीं होती।
मझधार में वो मेरी नाव पार लगाते हैं॥
मेरे दुख के.....॥

दिल से जो याद करे, वो उनके घर आयें।
दर पे फरियाद करें, ये झोली भर जाये।
खुशियों का जीवन में, पैगाम लाते हैं॥
मेरे दुख के.....॥

ये बड़े दयालु हैं, दुख पल में हरते हैं।
अपने भक्तों का ये, हर काम करते हैं।
दुखियों के दुख को ये जान जाते हैं॥
मेरे दुख के.....॥

ये इतने बड़े होकर, हर किसी से प्यार करें।
सदियों से सुदामा के चावल स्वीकार करें।
ये भक्तों का कहना, सहज ही मान जाते हैं॥

29.

गुरुवर पनाह में हमें रखना, सीखे जिनधर्म पर हम चलना।
कपट करम चोरी बेईमानी और हिंसा से हमको बचाना।
करुणा की छाँव में हमें रखना, सीखे जिनधर्म पर हम चलना।
गुरुवर पनाह में.....॥
क्षमावान कोई तुमसा नहीं, मुझसा नहीं कोई अपराधी।
पुण्य की नगरी में भी मैंने, पापों की गठरी ही बाँधी।
अपनी निगाह में हमें रखना, सीखे जिनधर्म पर हम चलना।
गुरुवर पनाह में.....॥

30.

कल भी मन अकेला था, आज भी अकेला है।
जाने मेरी किस्मत ने, कैसा खेल खेला है॥
ढूँढते हो तुम खुशबू, कागजी गुलाबों में।
धर्म सिर्फ मिलता है, आज कल किताबों में।
झूठे रिश्ते नाते सब, स्वार्थ का झमेला है॥
जाने मेरी.....॥
जिंदगी के मण्डप में, हर खुशी कँवारी है।
किससे माँगने जाए हर कोई भिखारी है।
यू कहो कि आँखों में आँसुओं का रेला है॥
जाने मेरी.....॥

31.

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना॥

1.

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो न किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना॥
हम चलें .....॥

2.

हम अंधेरे में हैं रोशनी दे,
खो न दे खुद को ही दुश्मनी से।
हम सजा पायें अपने किये की,
मौत भी हो तो सह लें खुशी से।
दर्द गुजरा है कल फिर न गुजरे,
आने वाला वो कल ऐसा हो ना॥
हम चलें .....॥

3.

हम न सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बाँटे सभी को,
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन।
अपनी करुणा का जल तू बहा कर,
कर दे पावन हर इक मन का कोना॥
हम चलें .....॥

4.

हर तरफ जुल्म है बेबसी है,
सहमा सहमा सा हर आदमी है।
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए,
जाने कैसे ये धरती थमी है।
बोझ ममता का तू ये उठा ले,
तेरी रचना का यूँ अन्त हो ना॥
हम चलें .....॥

हम चलें नेक रस्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना ॥

32.

प्रभो दर्श कर आज घर जा रहे हैं,
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं।
प्रभो दर्श .....॥

हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई।
यू खाली फकत जोड़कर जा रहे हैं॥
प्रभो दर्श .....॥

सुना तुमने तारे अधम और कामी,
न धर्मी सही फिर भी है तेरे हामी।
हमें भी तो करना अमर जा रहे हैं ॥
प्रभो दर्श .....॥

बुलाना कभी फिर भी दर्शन को अपने,
लगे इस बहाने मेरे कर्म झरने।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं ॥
प्रभो दर्श .....॥

उन्नति के मार्ग में बाधाएँ आयेंगी।
मुलाकात उनसे कुछ देकर जायेंगी॥

गुजरते वक्त के बुझते हुए चिरागों से।
नये चिराग जलाओ तो कोई बात बने॥

33.

मन की तरंगे मार ले बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधार ले बस हो गया भजन॥ टेक॥

ये तेरा है ये मेरा है, ये भाव है बुरा,
सबको जो अपना मान ले मानुष बना खरा।
अपनी कषाय मार ले, बस हो गया भजन॥

रहता है झोपड़ी में मगर, महलों की चाह है,
ये चाह ही तो तेरे लिये काँटों की राह है।
इस चाह को तू मार ले , बस हो गया भजन॥

पर में न खोजना कभी, निज धर्म को सदा,
हर दम वो तेरे पास है, तुझसे नहीं जुदा।
अपने को आप जान ले , बस हो गया भजन॥

एक आदमी की बड़ी कद्र है मेरे दिल में।
भला तो वो भी नहीं है पर बुरा कम है॥

एक न एक शमा अंधेरे में जलाये रखना।
सबेरा होने को है हौसला बनाये रखना॥

34.

नाम जब से तुम्हारा वरण कर लिया।
दर्श ने दर्द का परिहरण कर लिया॥

एक ठोकर लगादो तो तर जायेंगे।
दूर क्यों तुमने अपना चरण कर लिया॥

सत्य अहिंसा की तुम एक तस्वीर हो।
इस नये दौर के आप महावीर हो॥

आप पर गर्व करती है माँ भारती।
खुद हिमालय करे आपकी आरती॥

मुक्ति मारग की ओर चरण कर लिया।
दर्श ने दर्द का परिहरण कर लिया॥

पुण्यवान वसुधा पर तुम हो, तुम बिन पुण्य कहाँ रहता।
संयमधारी पंचम युग में, तुम सा यतिवर कब मिलता॥
धीर वीर उपसर्ग विजेता, ज्ञानी हो तुम ज्ञायक हो।
अडिग अकम्प अचूक अच्युत हो, हम सबके भी तारक हो॥

35.

कभी तो ये बाबा माँझी बन जाता है।
कभी तो ये बाबा साथी बन जाता है ॥
अंगुली पकड़ मेरी चलना सिखाता है।
कर्मों से छुड़ा करके भगवन बनाता है॥
तो बोलो न ... कभी तो.....॥
ठोकर लगी मुझको पत्थर नुकीला था ।
पर चोट न आई बाबा ने सम्हाला था ॥
सुनते है तेरी रहमत दिनरात बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाये किस्मत ही बदलती है॥
तो बोलो न ... कभी तो.....॥
जो ठुकरा दिया तुमने हम किससे बोलेंगे।
दर तेरे खड़े होकर छुप छुप के रो लेंगे॥
गुरु देव की महिमा को सब मिलकर गायेंगे।
इस स्वर्ण सुअवसर को अब सफल बनायेंगे॥
तो बोलो न ... कभी तो.....॥

श्वाँसों की बस्ती में मौत का रहवास है।
जिन्दगी तो केवल एक विश्वास है॥

नजरें तेरी बदली तो नजारे बदल गये।
किश्ती ने बदला रुख तो नजारे बदल गये॥

36.

धरती की शान है तू वीर की संतान।
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे॥
मनुष्य तू बड़ा महान् है भूल मत मनुष्य तू
तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे 2,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अंबर से जोड़ दे
अमर तेरे प्राण[2] मिला तुझको वरदान
तेरी आतमा में स्वयं भगवान है....
रे मनुष्य तू.....॥
नयनों में ज्वाल तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छुपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि सा-भाल
तेरी भृकुटी में ताण्डव का ताल है
निज को तू जान[2] जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है....
रे मनुष्य तू.....॥
धरती सा धीर तू है अग्नि सा वीर,
तू जो चाहे काल को भी थाम ले
पापों का प्रलय रुके पशुता का शीश झुके
तू जो अगर हिम्मत से काम ले
गुरु सा मतिमान[2] पवन सा गतिमान
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है ....
रे मनुष्य तू.....॥

37.

बहती ज्ञान की धार, गुरुवर तुम्हारे द्वार।
विद्यासागर महाराज तुम तो मेरे गुरुवर हो॥
तुम्हीं तो .....॥
मन में ज्ञान भरा, वचनों में ज्ञान भरा।
जीवन में ज्ञान भरा॥
तुम तो मेरे गुरुवर हो, तुम्हीं तो मेरे गुरुवर हो ।
संसार तो है नश्वर, संसार में क्या रहना॥
जो साथ में न जाये, क्या साथ उसके रहना।
दो ऐसी ज्योति हमको, कर दो मेरा उद्धार॥
तुम्हीं तो.....॥
ये दुनिया काम न आये, तेरे ज्ञान में है सच्चाई ।
इसलिए छोड़ के दुनिया, तेरी ओर खिंची चली आई ॥
ऐ गुरुवर मेरे गुरुवर, कर दो मेरा उद्धार॥
तुम्हीं तो .....॥
भटके जिया भव-भव में, नहीं चैन पल भर पाये।
नरकों में गिरकर देखो, ये कितना कष्ट उठाये॥
मिले तुमसे ज्ञान हमको, कर दो मेरा उद्धार॥
बहती ज्ञान की धार तुम्हीं तो.....॥

जिस पर जो गुजरी है उसे भूल जाना चाहिए।
छोटी-सी जिन्दगी है सदा मुस्कराना चाहिए॥

38.

चरणों में नमन हमारा-2 करलो गुरुवर स्वीकार।
गुरुवर हमको दीजिये संयम का उपहार॥
गुरुवर हमको दीजिये.....॥
किसी से मत कहना गुरुवर, इक दिल की बात बताते हैं।
घर जाने को मन नहीं करता, पास में जब आ जाते हैं।
वाणी का कहें करिश्मा या, त्याग का कहें प्रताप ॥
गुरुवर हमको दीजिये.....॥
तीन बात कुछ दिन से गुरुवर मेरे हृदय समाई हैं।
प्रथम तो हो गृह त्याग व दूजी मुनि की मुद्रा भाई है।
तीजा हो मरण समाधि-2, अब दे दो आशीर्वाद।
गुरुवर हमको दीजिये.....॥
गुरुवर की स्तुति करने से, कट जाते जन्मों के पाप॥
मन में भाव बहुत हैं कहने शब्द नहीं हैं मेरे पास।
जयवंत रहें मेरे गुरुवर-2, और जिये हजारों साल॥
गुरुवर हमको दीजिये.....॥
बासौदा में विद्या गुरुवर की कुछ कृपा निराली है।
भेज दिया कई शिष्यों को, अब तो गुरुवर की बारी है।
गुरु संघ सहित आ जायें -2, मिल सभी करें पुरुषार्थ॥
गुरुवर हमको दीजिये.....॥
चतुर्मास तो बीत चुका अब शीतकाल की बारी है।
हो ग्रीष्मकाल भी यहाँ पर-2, फिर बाद में हो चतुर्मास॥
देना है तो दीजिए मोक्ष नगर तक साथ॥

39.

मेरे भगवान् मेरी यही आस है।
पार कर दोगे बेड़ा यह विश्वास है॥

मन के मंदिर में आँखों के रस्ते तुझे।
मेरे भगवान् लाना पड़ा है मुझे॥
मेरे दिल से न जाना ये अरदास है।
मेरे भगवान् मेरी यही आस है॥

तेरे रहने को मंदिर बनाया है मन।
तेरे चरणों में अर्पण किया तन व धन॥
मेरे दिल से न जाओगे विश्वास है।
मेरे भगवान् मेरी यही आस है॥

प्रेम की डोर से बाँधकर हे प्रभु!
अपने दिल में मैं रखूँगा तुझको विभो!
तुमको जाने का दूँगा न अवकाश है।
मेरे भगवान् मेरी यही आस है॥

मत रूप निहारो दर्पण में, दर्पण मैला हो जायेगा।
निज रूप निहारो अन्तर में, अन्तर उजला हो जायेगा॥

40.

हे प्रभो जिनदेव स्वामी क्या मेरी तकसीर है।
कर्म बैरी ने मेरे डाले गले जंजीर है ॥

कैद करके चार गतियों में फिराया है मुझे।
दुःख सागर में डुबोया क्या करूं तकदीर है॥
हे प्रभो जिनदेव .....॥
जो जगत में देव थे मैं पास उनके जा चुका।
वे विचारे खुद दुःखी मेरी हरे क्या पीर है॥
हे प्रभो जिनदेव .....॥
बहुत दिनों से आपकी महिमा सुनी थी कान से।
आज देखे आँख से जागी मेरी तकदीर है॥
हे प्रभो जिनदेव .....॥
आपने कर्मों को जीता और जिताया और को।
क्यों न हो जब आपके कर ज्ञान कर समसीर है॥
हे प्रभो जिनदेव .....॥
भील तस्कर सिंह सूकर से बचाये आपने।
फिर भला 'मक्खन' के दुःख का क्यों न हो आखीर है॥
हे प्रभो जिनदेव .....॥

नहीं जरूरत बन्दूकों, बमों और हथियारों की।
आवश्यकता आज हमें है सद्भावना सद्विचारों की॥

41.

यह संसार सागर दुःखों से भरा,
यामें सुख तो नजर, कहीं आता नहीं।
यामैं मोह का जाल बिछा है गजब,
यामें जीव फंसे हैं खबर ही नहीं॥
यह संसार ....॥
कैसे माता पिता, कैसे बन्धु सखा,
कैसे भाई बहिन, कैसे दारा पति।
ये तो स्वारथ हैं ये तो हैं न सगे,
सच पूछो तो रहने को घर भी नहीं॥
यह संसार ....॥
नदी नाव संयोग से आके मिले,
जैसे पेड़ो पे पंछी बसेरा करे।
अरू भोर भये सब उड़ ही गये,
साथ चलने का कोई जिकर ही नहीं॥
यह संसार ....॥
अरू फौज पमादे हजारो खड़े,
चाहे महल किले में बन्द करे।
चाहे जंतर मंतर लाखों करे,
मौत टाले किसी की भी टलती नहीं॥
यह संसार ....॥

42.

(तर्ज- सुहानी चाँदनी रातें)

चलो चिड़िया हुआ पूरा यहाँ का आबदाना है।
पुरानी हो गई बस्ती पुराना आशियाना है॥
छोड़कर जायेगा जिस दिन तू अपनी धर्मशाला को।
तुझे उस रोज कमरे का किराया भी चुकाना है॥
चलो.....॥

पुराना हो गया आँगन पुरानी हो गई बस्ती।
जहाँ ताला लगाते थे वो दरवाजा पुराना है॥
चलो.....॥

गये जब राम, केशव, वीर, ईशा और मोहम्मद भी।
अगर हम भी चले जायें तो आँसू क्या बहाना है॥
चलो.....॥

जन्म और मृत्यु के क्रम में जरा सा भेद होता है।
किसी से दूर होना है किसी के पास जाना है॥
चलो.....॥

इस युग में रजत और स्वर्ण के आकर्षण और विकर्षण से।
हमें हट के अब आगे भी ठिकाना तो बनाना है॥
चलो.....॥

जन्म और मृत्यु के क्रम में जरा सा भेद होता है।
कही दीपक जलाना है कहीं दीपक बुझाना है॥
चलो.....॥

43.

विद्यासागर गुरु हमारे, आपको शत-शत नमन।
बार-बार प्रणाम करते, आपको मेरे नयन॥
विद्यासागर गुरु.....॥

जब हृदय में धारते हैं, आपको मेरे नयन।
चैन मिल जाये गुरु जब, आपकी हों हम शरण॥
वीतरागी हो गुरु, करते नमन हम भक्त गण।
बार-बार प्रणाम करते आपको मेरे नयन॥
विद्यासागर गुरु.....॥

सूर्य के जैसा चमकता, आपका मस्तक अटल।
यह प्रकाशित कर रहा है, पृथ्वी और आकाश तल॥
धन्य हैं हम हैं गुरु पा, आपकी पावन शरण।
बार-बार प्रणाम करते, आपको मेरे नयन॥
विद्यासागर गुरु.....॥

चन्द्र के जैसा चमकता, आपका यह मुख कमल।
आपके चारों तरफ हैं तारों, सम यह शिष्य गण॥
ठंडी-ठंडी चाँदनी सी, ज्ञान की किरणें खिरे।
ज्ञान की किरणें समेटूं, जब हो मेरा मन मगन॥
विद्यासागर गुरु.....॥

पीर पराई देखकर जिसकी आँखों में नीर बहता है।
मेरी दृष्टि में उसके भीतर महावीर रहता है॥

44.

कैसा शुभ दिन आया है, प्रभु का दर्शन पाया है।
आज मानो मेरा कोई,सोया भाग्य जगाया है॥
हे मेरे जिन, हे मेरे जिन[3]

चाह विषयों की कितना सताती थी।
हर घड़ी हर पल मुझको रुलाती थी॥
द्वार में आके जो सिर नवाया।
सारे दुःखों को पल में मिटाया
तुम सब जानो, बिन मैंने जिन कितना दुख उठाया है॥
कैसा शुभ दिन.....॥

अब मुझे स्वामिन चरणन में रहना है।
भाव से जिनका सदा ध्यान करना है॥
मूरत ये तेरी वरदान है जिन।
आतम की सच्ची पहचान है जिन॥
मन मंदिर में मूरत को प्रभु,मैंने आज बिठाया है।
कैसा शुभ दिन.....॥

हर उलझन सुलझन बन सकती है हम उलझना छोड़ दें।
हर समस्या समाधान बन सकती है निज से नाता जोड़ लें॥

45.

धीरे-धीरे चलो जी मंदिर, भगवन के गुण गाने को।
बढ़ते चलो हजारो लोगों, वीतरागता पाने को॥

घर से मेरे भाव बने मैं, मंदिर जी में जाऊँगा।
पार्श्वप्रभु के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा॥
चेतनता के दर्शन करता, भव में पुण्य कमाने को।

भक्ति भाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा।
दोनों हाथ में कलश को लेकर, भगवन को नहलाऊँगा॥
ऐसा भव्य जीव ही करते, पाप अनंत मिटाने को॥

थाल में अष्ट द्रव्य को लेकर, पूजन विधि को रचाऊँगा।
देवशास्त्रगुरु पूजन करके, भव-भव में सुख पाऊँगा॥
गुरु की प्रतिदिन पूजा करता, रत्नत्रय को पाने को॥

हे प्रभु आप हो केवलज्ञानी, तीनलोक विजेता हो।
हे प्रभु आप तो सिद्ध स्वरूपम्, मुक्तिपथ के नेता हो॥
राह सही मुझको बतला दो, मंजिल अपनी पाने को॥

सफलता के लिए मिलकर, सभी को काम करना है।
हमें आकाश से ऊँचा, वतन का नाम करना है॥

46.

गुरु तू न मिला, सारी दुनिया मिले भी तो क्या है।
मेरा मन न खिला[3], सारी बगिया खिले भी तो क्या है॥
गुरु तू .....॥
मैं धूल हूँ और तुम हो गगन, कैसे छुये तेरे पावन चरण।
लाख बन्धन यहाँ[3], मन में भक्ति पले भी तो क्या है॥
गुरु तू .....॥
तकदीर की मैं कोई भूल हूँ, डाली से बिछुड़ा हुआ फूल हूँ।
तेरा साथ नहीं[3], संग दुनिया चले भी तो क्या है॥
गुरु तू .....॥
चरणों में आके जो रो लेते हम, आँसू नहीं हैं वो मोती से कम।
तेरे चरण नहीं[3], मेरे आँसू गिरे भी तो क्या है॥
गुरु तू .....॥

आप रहे शैथिल्य निवारक, और उपास्य हमारे हो।
पुरुषोत्तम हो यशोमूर्ति हो, यश आधार हमारे हो॥
जिस विध तुला यन्त्र कहलाता, दण्ड विधेता जगती में।
उस विध न्याय विधेता तुम हो, नेता शिव के जगती में॥

47.

गुरुवर तेरे चरणों की, मुझे धूल जो मिल जायें।
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जायें॥ टेक॥

मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे में समझाऊँ।
इसे जितना भी समझाऊँ, उतना ही मचल जाये॥

मेरी नाव भंवर में है, इसे पार लगा देना।
तेरे एक इशारे से, मेरी नाव उभर जायें॥

नजरों से गिराना ना चाहे, जितनी सजा देना।
नजरो से जो गिर जायें, वो कैसे सम्हल पाये॥

बस एक तमन्ना है, गुरु सामने हो मेरे।
गुरु सामने हो मेरे चाहे, प्राण निकल जाये॥

दानेश्वर हो अभय ज्ञान के, चतुःसंघ तुष्टि दायक।
शिरोमणि सन्तों में तुम हो, और तुम्हीं मुक्ति दायक॥
इच्छाओं को मोह जन्मता, स्वामी प्रबल अज्ञान रहा।
अज्ञानी और अनाथ जनको, गुरुवर तेरी शरण महा॥

48.

सुबह और शाम को प्रभुजी के नाम की,फेरो एक माला हो।
सेठ सुदर्शन सीतासती ने फेरी इकमाला!

सूली से सिंहासन हो गई, शीतल हो गई ज्वाला।
कर्म की ज्वाला मेटो ततकाला, फेरो इकमाला॥

सोमासती ने सुमिरन करके,नाग उठाया काला।
महाभयंकर विषधर से वो हुई फूलों की माला॥

धर्म का प्याला पियो मेरे लाला, फेरो इकमाला।
बालकुमारी राजकुमारी देखो चंदनबाला॥

महाभयंकर संकट पड़ गया,सिर से बाल उतारा।
शील को जिसने पाला सत रखवाला, फेरो इकमाला॥

दर्शन वह है जो अंधकार को सितारा बना दे।
पौरुष वह है जो मझदार को किनारा बना दे॥
ज्ञानामृत रस वह है जो गुरु अपनी वाणी से पिला दे।
धर्मज्ञान वह है जो आत्मा का कल्याण करा दे॥

49.

ढोल बजा के बोल कि बाबा मेरा है ।
जोर जोर से बोल कि बाबा मेरा है॥
कोई बोलो बड़रा कोई बोले छोटा।
बाबा है अनमोल कि बाबा मेरा है॥

ताली बजा के बोल कि बाबा मेरा है ।
कोई बोले उत्तर कोई बोले दक्षिण॥
कोई बोले पूरब कोई बोले पश्चिम ।
वो तो है चहुँओर कि बाबा मेरा है॥

कोई बोले मोटा कोई बोले पतला ।
बाबा गोल मटोल कि बाबा मेरा है॥
जोर जोर से बोल कि बाबा मेरा है।
ढोल बजा के बोल कि बाबा मेरा है॥

प्रभु का दरबार ही अनंत सुख का टैंक है।
अनंत सुख के टैंक में सम्यक् रूपी बैंक है॥
सम्यक् रूपी बैंक में जो भी खाता खोलेगा।
धर्म रूपी ब्याज कमाकर मोक्ष का गेट खोलेगा॥

50.

उड़ा जा रहा है पंछी हरी-भरी डाल से,
रोको रे रोको कोई मुनि को विहार से।
सोचा न कभी हमने आके जगाओगे,
और जगा के हमें यूँ ही छोड़ जाओगे।
दान देना जीवन का फिर से पधार के॥
रोको रे रोको.....॥
सरगम की तानें टूटी रूठ गई साँसें।
आके मनाओ गुरुवर, रो रही आँखें।
दीप जलाओ सम्यक दीवाली मनाय के,
रोको रे रोको.....॥
पास जो तेरे रहके भजन मैंने गाये,
जीवन में उतने मैंने पुण्य कमाये।
पुण्य की वरषा करो नगर में पधार के,
रोको रे रोको.....॥
कम्पित है मन की बगिया हरियाली आज है,
पतझड़ आ न जाये सूखा वृक्ष आज है।
कर्मों का पुण्य नहीं है, जायें गुरु आज रे,
रोको रे रोको.....॥
गुरु और ऐलक, क्षुल्लक, माता कृपा करो
हो गई जो भी गलती हमको क्षमा करो,
मोह का बंधन हम पर, गिरे आँसू आज रे,
रोको रे रोको.....॥

51.

जिया कब तक उछलेगा, संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में॥
जिया कब.....॥

उड़-उड़ कर ये चेतन, गति-गति में जाता है।
रागों में लिप्त सदा, भव-भव दुख पाता है॥
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है।
ये जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में॥
जिया कब.....॥

तू कौन कहाँ का है, और क्या है नाम तेरा।
आया किस घर से यहाँ, जाना किस गाँव अरे॥
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन के ठाठ भरे॥
जिया कब.....॥

यदि अवसर चूका तो, भव-भव पछतायेगा।
ये नर भव कठिन महाँ, किस गति में जायेगा॥
नर भव पाया भी तो, जिन कुल न पायेगा।
अब गिनती जन्मों की, अगणित विकल्पों में॥
जिया कब.....॥

52.

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान,
तेरा नाम लेते लेते, इस तन से निकले प्राण।
इस तन से निकले प्राण॥ टेक॥
पुण्य उदय से मेरे भगवन, मैंने यह नर तन पाया,
संयम पालन में बाधाएँ डाले, जग की मोह माया।
फिर भी ये अरज करता हूँ, हो सके तो देना ध्यान॥
करता रहूँ गुणगान.....॥
सीता चंदनबाला जैसी, दुख सहने की शक्ति दो,
विचलित न हूँ पथ से भगवन, मुझमें ऐसी भक्ति दो।
तेरी भक्ति में ही बीते, इस जीवन की हर शाम,
इस जीवन की हर शाम॥
करता रहूँ गुणगान.....॥
क्या मालूम कब कौन किस घड़ी मेरा बुलावा आ जाये,
मेरे मन की इच्छा मेरे मन ही मन में रह जाए।
मेरी इच्छा पूरी करना हे जिनवर दया निधान,
हे जिनवर दया निधान॥
करता रहूँ गुणगान.....॥

53.

ये सागर से गहरे हिमालय से ऊँचे।
इन्हें कौन बाँधे इन्हें कौन रोके।
ये चंचल हवाओं के हैं झोके।
इन्हें कौन बाँधे इन्हें कौन रोके।

मुस्कान से जिनके खिल जायें कलियाँ।
चरण जिनके बतलाये जन्नत की गलियाँ।
ये बहती हुई नदी के हैं धारे,
इन्हें कौन बाँधे इन्हें कौन रोके॥

ये ईश्वर हैं या उसकी जादूगरी है।
महावीर सी इनमें करुणा भरी है।
जो राग द्वेष को छोड़ चला हो।
इन्हें कौन बाँधे इन्हें कौन रोके॥

ये कुन्दकुन्द गुरु के हैं कुन्दन।
लगते हैं जैसे हो त्रिशला के नन्दन।
जिन्हें माँ की ममता भी न रोक पायी।
इन्हें कौन बाँधे इन्हें कौन रोके॥

54.

प्रभु नाम जपने से नव जीवन मिलता है,
तन मन का मुरझाया उपवन खिलता है।
अन्तर के कोने में एक दीपक जलता है।
प्रभु .....॥
श्री पाल प्रभु गुण गाकर, हाँ गाकर-2
तूफां में भी प्रभु पार हुए वो सागर-2
चंदन बाला दर्शन से हाँ दर्शन से-2
देखो पल में दूर हुए बंधन वे-2
तन मन का.....॥
हो सर्प अगर विष वाला, हाँ विषवाला-2
कर लो मन में ध्यान, बने जयमाला-2
भव ताप सभी मिट जाये-2
सुमरन से संताप सभी टल जायें।
तन मन का.....॥
संसार समुद्र है गहरा, हाँ गहरा,
कर्मों का हर ओर लगा, है पहरा-2
सब छोड़ जगत की माया हाँ माया-2
ले लो मन तुम वीर चरण की छाया हाँ छाया।
तन मन का.....॥

55.

करले आतम का गुणगान, आई आनन्द घड़ी।
आई आनन्द घड़ी, आई मंगल घड़ी॥

भोग रोग की खान है, भोग बुरे ही जान।
जिन छोड़े इन भोग को, पहुँचें शिवपुर थान॥

पर निमित्त जामें नहीं, सहजानन्द अपार।
सोई परमानन्द हैं, भोगे निज आधार॥

अंतरंग में ध्यान से, देखे जो अशरीर।
शर्म जनक भव न धरे, पिये न जननी क्षीर॥

भैया महिमा ब्रह्म की, कैसे वरनी जाय।
वचन अगोचर वस्तु है, कहिवो वचन बनाय॥

जो जिन सो आतम लखो, निश्चय भेद न रंच।
यहै सार सिद्धांत को, छोड़ा सर्व प्रपंच॥

वीतराग सर्वज्ञ के चरणन शीश नवाय।
जो चहुँगति दुखतै डरो, तो तज दे पर भाव॥

56.

ॐ को नमन ओंकार को नमन -2
अरिहंत को नमन, सिद्ध प्रभु को नमन-2
आचार्य को नमन, उपाध्याय को नमन-2
सर्व साधु को नमन, जिनधर्म को नमन-2
ॐ मंगलं ओंकार मंगलं..... 2
अरिहंत मंगलं सिद्ध प्रभु मंगलं.....2
आचार्य मंगलं उपाध्याय मंगलं 2
सर्वसाधु मंगलं जिनधर्म मंगलं 2

ॐ उत्तमा ओंकार उत्तमा..... 2
अरिहंत उत्तमा सिद्ध प्रभु उत्तमा.....2
आचार्य उत्तमा उपाध्याय उत्तमा.....2
सर्वसाधु उत्तमा जिनधर्म उत्तमा.....2

ॐ शरणं ओंकार शरणं..... 2
अरिहंत शरणं सिद्ध प्रभु शरणं.....2
आचार्य शरणं उपाध्याय शरणं.....2
सर्वसाधु शरणं जिनधर्म शरणं 2

57.

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये, हाँ जी हाँ जी आयेआये।
पुण्य उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये॥ टेक ॥

जन्म मरण तिन करते करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म मरण का दुखड़ा सहा न जाये॥

भव सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
'पंकज' की प्रभु यही वीनती, चरण शरण मिल जाये॥

58.

चलो चलो सखी अपने देश, बहुत रह लिया अब परदेश।
भीड़भाड़ है आठों याम मचा हुआ है क्या कुहराम ।
नहीं सुहाता ये परिवेश। चलो चलो सखी अपने देश॥

यहाँ न कोई अपना है लगता सब ज्यों सपना है।
दिखता नहीं शान्ति लवलेश। चलो चलो सखी अपने देश॥

चहुँगति फिरे रखे बहुभेष भोग लिये बहु दुःख अशेष।
नहीं रही कोई इच्छा शेष। चलो चलो सखी अपने देश॥

कितना प्यारा अपना देश जहाँ नहीं है दुःख का लेश।
अरे! वहाँ तो सब अखिलेश। चलो चलो सखी अपने देश॥

59.

बेला अमृत गया, वक्त तू खो रहा, आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा॥ टेक॥
कर्म उत्तम से नर तन है पाया, आलसी बन के हीरा गमाया।
हंस का रूप था, पानी गंदा पिया बन के कागा॥
साथी .....॥
झोलियां भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीवन सम्हाले।
आतम रस से रंगा, ज्ञान रस से पगा बन विरागा॥
साथी .....॥
सार ग्रन्थों का देखा न भाला, सर से ऋषियों का ऋण न चुकाया।
सौदा घाटे का कर, हाथा पाये पे रख रोबन लागा॥
साथी .....॥
सीख सद्गुरु की अब मान ले तू, जानने को जो है जान ले तू।
मोह निद्रा भगा, आतम ज्योति जगा, कर्म भागा॥
साथी .....॥

जो सताते हैं औरों को, सताये वो भी जायेंगे।
जो करते हैं दया दीनों पर, दयालु वो कहलायेंगे।
जो करते हैं मुनि सेवा, मुनि भक्त वो कहलायेंगे।
मुनि भक्त कहलाने वाले मुनि स्वयं बन जायेंगे॥

60.

अपने घर को देख बाबरे, सुख का जहाँ खजाना है,
क्यों पर में सुख खोज रहा है,क्यों पर का दिवाना रे॥
॥ टेक॥
ये माटी के खेल खिलौने माटी तन की रानी है।
माटी का तन माटी का मन माटी की राजधानी है।
माटी के पुतले तेरा तो माटी धरा बिछौना रे॥

पर परणति पर भाव निरखता, आत्म तत्त्व को भूला रे,
परभावों में सुख दुःख माने झूल रहा जब झूला रे।
सहजानन्दी रूप तुम्हारा जग में गाना गाना रे॥

चिंतामणि सा नर भव पाया, कल्प वृक्ष सा जिनदृश रे,
गंवा रहा है रत्न अमोलक क्यों विषयों में फँस फँस रे।
लुट जायेगा एक दिन तेरा सारा ताना बाना रे॥

घूम लिये हैं चारों गति में अब तो निज का ध्यान करो,
जहर हलाहल बहुत पिया है, अब समता रस पान करो।
अपने गुण की छांह बैठ जा दूर नहीं है जाना रे ॥

त्रस थावर पर्याय बदलता पिये मोह की हाला रे,
कभी स्वर्ग के आँगन देखे, कभी नरक की ज्वाला रे।
चौरासी के पथिक तुम्हारा शिवपुर दूर ठिकाना रे॥

61.

तुम शरद पूनम के चन्दा, ओ माँ श्रीमति के नन्दा।
हे पंच परम पद धारी, श्री विद्या गुरु मुनिन्दा।
तुम ज्ञान सिन्धु के मोती, श्री विद्यागुरु मुनिन्दा
चलते फिरते सिद्धालय, सिद्धों का चिन्तन चलता।
सिद्धासन मन है जिनका, आगम बगिया में रमता
हे सिद्ध स्वरूपी गुरुवर, आगामी सिद्ध महन्ता।
हे ज्ञान सिन्धु.....॥
तीर्थंकर सम इस युग में, गुरु समवशरण अति प्यारा
अमृत वाणी को सुनकर, सम्यग्दर्शन हो जाता है
सब भव्य कुमुद खिल जाते, मुनिगण तारे गुरु चन्दा
हे ज्ञान सिन्धु.....॥
पञ्चाचारों से भूषित, रत्नत्रय हार को धारा
शिष्यों को दीक्षा देकर, इस जग को दिया सहारा
तुम जिनशासन के सूरज, और मुक्ति वधु के कंता
हे ज्ञान सिंधु.....॥
पाठक परमेष्ठी गुरुवर, श्री कुंदकुंद जिनागम
श्रुत ज्ञान का दीप जलाकर, हरते जग का मिथ्यातम
संयम के उच्च हिमालय, बहती है ज्ञान की गंगा
हे ज्ञान सिंधु.....
शुद्धातम के जो साधक, हैं मूलगुणों की मणिया
गिरी गुफा में ध्यान लगाते, छोड़ी है सारी दुनिया
आगम चक्षु के धारी, गुरु भी हो तुम गोविन्दा
हे ज्ञान सिंधु.....॥

62.

मुझे ऐसा वर दे दे, गुणगान करूँ तेरा।
इस बालक के सिर पे गुरु हाथ रहे तेरा-2

सेवा नित तेरी करूं, तेरे द्वार पे आऊँ मैं -2
चरणों की धूलि को, निज शीश लगाऊँ मैं -2
चरणामृत पाकर के, नित कर्म करूँ मेरा
इस बालक.....॥
भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो-2
अरदास करूँ गुरुवर, अभिमान को चूर करो-2
नहीं द्वेष रहे मन में, रहे वास गुरु तेरा
इस बालक.....॥
विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हो मेरे-2
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, सपनों में रहो मेरे-2
चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल करो मेरा
इस बालक.....॥
मेरे यश कीर्ति को, गुरु मुझसे दूर रखो
इस मन मंदिर में तुम, भक्ति भरपूर भरो
तेरी ज्योति जगे मन में, नित ध्यान करूँ तेरा
इस बालक.....॥

63.

छुक - छुक - छुक - छुक रेल चली ये जीवन की-2
हँसना-रोना-जागना-सोना, खाना-पीना, दुःख-सुख
छुक-छुक-छुक-छुक.....॥
छोटी - छोटी बातों से ये मोटी-मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जायेगी हमको माँ की गोद से कब्रों तक॥
सब चिल्लाते रह जायेंगे, रुक-रुक-रुक-रुक॥
छुक-छुक-छुक-छुक.....॥
सामा बाँध के रक्खो लेकिन चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाये, चलने को तैयार रहो॥
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक॥
छुक-छुक-छुक-छुक.....॥
पाप और पुण्य की गठरी बाँध के सत्य नगर को जाना है।
जीवन की गठरी बाँध के हमको दूर सफर को जाना है॥
ये भी सोच ले बंदे तूने क्या माल किया है बुक॥
छुक-छुक-छुक-छुक.....॥
रात और दिन इस रेल के डिब्बे और साँसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिये और चिन्ता स्टेशन है॥
जैसे दो पटरी हो वैसे साथ चले सुख-दुःख॥
छुक-छुक-छुक-छुक.....॥

64.

आत्म शक्ति से ओत-प्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो।
गुरुवर ऐसा वर दो।
रहे मनोबल अचल मेरू सा तनिक नहीं घबराऊँ।
प्रबल आँधियाँ रोक सके ना, आगे बढ़ता जाऊँ।
उड़ जाऊँ निर्बाध लक्ष्य तक, गुरुवर ऐसे पर दो।
गुरुवर ऐसा.....॥
है अज्ञान निशा अंधियारी तुम दिनकर बन आओ।
ज्ञान और भक्ति की शिक्षा, बालक को समझाओ।
विनय भरा गुरु ज्ञान मुझे दो, मन ज्योर्तिमय कर दो।
गुरुवर ऐसा.....॥
सुमति सुजस सुख संपति दाता, हे गुरुवर अपना लो।
संत समागम चाहूँ मैं, मुझे अपने पास बिठा लो।
जैसा भी हूँ तेरा ही हूँ, हाथ दया का धर दो।
गुरुवर ऐसा.....॥
मैं अबोध शिशु हूँ गुरु तेरा, दोष ध्यान मत देना।
सब भक्तों के साथ मुझे भी, शरण चरण की देना।
हे गुरुवर सुख ज्ञान अभय और, मन भक्ति से भर दो।
गुरुवर ऐसा.....॥
आत्म शक्ति से ओत-प्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो।

65.

कैसे अदा करेंगे उपकार हम तुम्हारे।
हम तो बने सितारे बस आपके सहारे॥

तन को रचा संवारा माता पिता ने मेरे।
जीवन संवारा तुमने भर ज्ञान उर हमारे॥

तुम देवता से बढ़कर मेरे लिए हो ईश्वर।
चरणों में शीश मेरा ईश जी तुम्हारे॥

जब तक हैं हम जमीं पर विस्मृत न कर सकेंगे।
पथ के प्रदीप मेरे गुरुदेव हो सहारे॥

तुमसे मिला सब कुछ तुमको क्या भेंट दूँ मैं।
सूरज के आगे जुगनू की क्या बात करूँ मैं॥

जीवन सजाने वाली इतनी सी आरजू है।
नजरे न मोड़ लेना दर से कभी हमारे॥

सिन्धु महा वात्सल्य भाव के कलियुग बड़ा विघातक है।
श्रमणों की गिरती मर्यादा, जन-जन को उपहासक है॥
सम्बल दिया स्वयं शिष्यों को, संस्कृति का उत्थान किया।
भारत की वसुधा पर आकर, हम सबका परित्राण किया॥

66.

जिस जिस को तू अपना समझे वो सब तुझसे दूर हैं।
फिर क्यों बाँधे पाप गठरिया क्यों चेतन मजबूर है॥

जैसी करनी वैसी भरनी यही जगत की माया है।
अपना अपना भाग्य साथ में अपनी अपनी काया है॥
यह काया भी साथ न जाये जिस पर तुझे गुरूर है॥
फिर क्यों बाँधे.....॥
नरक निगोद पशु नर सुर गति घूमा इस संसार में।
सीख न मानी साँचे गुरु की पड़ा रहा मझधार में॥
द्वारे द्वारे फिरा भटकता थक कर चकनाचूर है॥
फिर क्यों बाँधे.....॥
यह धन माटी यह तन माटी जो भी दिखता माटी है ।
बनना बन कर फिर मिट जाना माटी की परिपाटी है॥
अविनाशी बस तू ही चेतन तेरा अद्भुत नूर है॥
फिर क्यों बाँधे.....॥
छोड़ जगत जंजाल पुजारी क्या रक्खा घमाशान में।
इक दिन आखिर जाना ही है इस तन को शमशान में॥
कर ले उसका ध्यान बावरे जो सुख से भरपूर है॥
फिर क्यों बाँधे.....॥

67.

चेतो चेतो चतुर सुजान, जरा तू अपने को पहचान।
तूने कर्म कलंक न धोया, सारा जीवन यूं ही खोया॥
तू है मूरख निपट अजान, जरा तू अपने को पहचान॥

तूने विषयों में सुख माना, सुख का असली रूप न जाना।
तेरी अकल हुई हैरान, जरा तू अपने को पहचान॥
तेरी अद्भुत सी है माया, किसने भेद तुम्हारा पाया॥

हारे ऋषि मुनि धर ध्यान, जरा तू अपने को पहचान।
तू है श्रेष्ठ गुणों का ज्ञानी, बन सकता तू केवलज्ञानी॥
तेरा रूप स्वरूप अजान, जरा तू अपने को पहचान॥

चेतन तू पर से ममत हटा ले, निज पे आतमज्योति जगा ले।
तू है ज्योति पुंज महान, जरा तू अपने को पहचान॥
चेतो चेतो चतुर सुजान, जरा तू अपने को पहचान॥

जो वीतरागी हो चुके और जिनको भविष्य में होना है।
वो वर्तमान में इस पथ पर, चल रहे कर्म मल धोना है॥
जो साधक हैं आराधक हैं, जिनसे अंतस हरि हारा है।
इस महत कार्य की सिद्धि हेतु, उनको नमन हमारा है॥

68.

सुन चेतन ज्ञानी क्यों बात न मानी,
समकित से कब निज आतम का शृंगार करोगे।
संयम की तरनी ले कब भव जल पार करोगे।

आया कहाँ से जाना तुझको कितनी दूर है।
सोचा नहीं विषयों में तू क्यों ऐसा चूर है॥
जप तप बिन नर भव की घड़िया बेकार करोगे।
संयम की तरनी ले कब भव जल पार करोगे॥

लगते हैं तुझको भोग के साधन जो सुहाने।
लुटवाता है इन गलियों में सद्गुण के खजाने॥
ऐसी गलती जीवन में कितनी बार करोगे।
संयम की तरनी ले कब भव जल पार करोगे॥

कल्याण यदि चाहो तो आत्मा को जान लो।
अपने और पराये का अन्तर पहचान लो॥
जड़ कर्मों की बोलो कब तक बिगार करोगे।
संयम की तरनी ले कब भव जल पार करोगे॥

पग-पग में भूलभूलैया हैं, यह दुनिया की राहें।
पथ भ्रष्ट बनाती तुझको कंचन कामन की चाहें॥
बदनाम पथिक होवे यदि जग की धार बहोगे।
संयम की तरनी ले कब भव जल पार करोगे॥

69.

बड़ेबाबा बिना तुमरे, नहीं कोई हमारा है।
शरण हमको सदा देना, यही हमको सहारा है॥

नहीं तुमसा यहाँ कोई जो, दुख संकट सभी हर ले।
दिखा के राह शुभ सच्ची, हमें अपने समा कर ले॥
मिला है आज भक्तों को, बड़े पुण्यों से द्वारा है।
शरण हमको .....॥ 1॥
तुम्हीं तारण-तारण जिनवर, तुम्हीं दुख कष्ट के हरता।
तुम्हीं सुख शान्ति के करता, तुम्हीं अज्ञान के हरता॥
तुम्हीं त्रयलोक के स्वामी, तुम्हारा नाम प्यारा है।
शरण हमको .....॥ 2॥
तुम्हारा नाम जपने से, विपत्ति दूर हो जायें।
मिले रोगों से झट मुक्ति, बंधन चूर हो जायें॥
तुम्हीं भव सिन्धु शोषक हो, तुम्हीं से मोह हारा है।
शरण हमको .....॥ 3॥
तुम्हें जो पूजते जग में, वही सत्कार पाते हैं।
तुम्हारी देख मूरत को, भगत भव पार जाते हैं॥
तुम्हीं 'सुव्रत' के पालक हो, तुम्हारा द्वार प्यारा है।
शरण हमको .....॥ 4॥

70.

मेरे अर्हत् पावन है, करुणा के तो सावन हैं।
जन्म मृत्यु दोनों ही तट से, पार लगा दे जो नैया॥
अर्हत् राम रमैय्या बोलो॥
मिट्टी के घर में बैठा है, अजर अमर अविनाशी।
बंद पिंजरा पंख शिथिल हैं, और चेतना प्यासी।
जल पोखर में डूब रहा है, सागर का तैरैय्या॥
अर्हत् राम.....॥
मिट्टी सान रही मिट्टी को, चकित है हंस बेचारा।
शाख-शाख पे डोल रहा है, मिला न कोई सहारा।
सुख के सारे दाने चुग गई, देखो रे काल चिरैया॥
अर्हत् राम.....॥
आती जाती साँसों के संग, एक मुसाफिर ठहरा।
बाहर देखो घात लगाये, मरण दे रहा पहरा।
सूरज डूबा तत्क्षण जागा, चलने लगी पुरवैया॥
अर्हत् राम.....॥
मिट्टी काया मिट्टी माया, क्यों इसमें तू डूब रहे।
काया माया दोनों छाया, क्षण भर में ये बदल रहे।
प्रभुध्यान ही काम आयेगा, सब जन के जो खिवैय्या॥
अर्हत् राम.....॥

71.

आगे आगे अपनी ही अरथी के मैं गाता चलूँ।
सिद्ध नाम सत्य है, अरिहन्त नाम सत्य है ॥

पीछे पीछे दूर तक दिख रही जो भीड़ है।
पंछी शाख से उड़ा, खाली पड़ा नीड़ है॥
सृष्टि सारी देख ले, पर्याय ही अनित्य है॥

जिनको मेरे सुख-दुखों से कुछ नहीं था वास्ता।
उनके ही कांधों पर मेरा कट रहा है रास्ता॥
आँख जब मुंदी तो कोई शत्रु है न मित्र है॥

डोरियों से मैं नहीं बंधा मेरा संस्कार था।
एक कफन पर ही मेरा रह गया अधिकार था॥
तुम उसे उतारने जा रहे यह सत्य है॥

आपके अनुराग को आज क्या ये हो गया।
जिस क्षण चिता चढ़ा, महान कैसे हो गया॥
जो अनित्य वो ही नित्य, नित्य ही अनित्य है॥

मैं अरुपी गंध दूर उड़ गयी थी फूल से ।
लहर थी चली गयी थी, दूर मृत्यु कूल से॥
सत्य देख हँस रहा कि जल रहा असत्य है॥

मैं तुम्हारे वंश से बिछुड़ा हुआ हूँ देवता।
आत्म तत्व छोड़ कर मैं जगत को देखता॥
ये अनादि काल की भूल का ही कृत्य है॥

सिद्ध नाम सत्य.....

72.

थोड़ा ध्यान लगा 2, गुरुवर तुझको पास बुलायेंगे
मुक्ति वे दिलायेंगे
अंखियाँ मन की खोल 2 तुझको दर्शन वो करायेंगे 2
थोड़ा ध्यान लगा॥

सम्यक् की छाया में बैठायेंगे तुमको, कहाँ तुम जाओगे।
उनकी दया दृष्टि जब पड़ेगी, तुम परे, भव से तर जाओगे।
ओ-3 प्रेम से पुकार-2 तेरे पाप वो जलायेंगे।
मुक्ति वे दिलायेंगे॥

मुनियों ने ऋषियों ने गुरु शिष्य महिमा का किया गुणगान है।
गुरुवर के चरणों में झुकती सकल सृष्टि सब के वो भगवान है।
ओ-3 महिमा है अपार-2 सत की राह वो दिखायेंगे।
मुक्ति वे दिलायेंगे॥

अपूर्व रही है क्षमता तुममें, परमारथ को देने की।
पूज्य हुई यह जगती तुमको, जितना-मय लख लेने की॥
आप रहे साधक संयम के, कहूँ तुम्हें संयम-स्वामी।
मानवेन्द्र जगती पर तुम हो, तुम्हीं शुद्ध अन्तर्यामी॥

73.

बिन तेरे गुरुवर मेरा हर गीत अधूरा लगता है,
बिन तेरे जीवन का हर संगीत अधूरा लगता है,
सम्यक् पथ पर चलने का ऽऽ[2] संकल्प अधूरा लगता है॥
बिन तेरे गुरुवर मेरा.....॥
मैं अबोध बालक था गुरुवर, तुमने चलना सिखलाया,
सुख-दुख में प्रिय-अप्रिय में, समता में ढलना सिखलाया।
आर्यजनों की संगति में, मिश्री-सा घुलना सिखलाया,
सदा स्वपर उपकारी बन, दीपक सा जलना सिखलाया।
बिना तेरे अपने पर का ऽऽऽ[2] हर दर्द अधूरा लगता है॥
बिन तेरे गुरुवर मेरा.....॥
भक्ति के स्वर ताल मधुर, झंकार तुम्हीं से है गुरुवर,
मन वीणा के तारों की, टंकार तुम्हीं से है गुरुवर।
शब्दों के लालित्य स्वरों में, जान तुम्हीं से है गुरुवर,
सच पूछो स्वर शब्दों की, पहचान तुम्हीं से है गुरुवर।
बिना बाती, बिन ज्योति के ऽऽऽ[2] हर दीप अधूरा लगता है॥
बिन तेरे गुरुवर मेरा.....॥

आप हमारी आत्म-शुद्धि के, परमालय भी प्राप्त रहे।
संयम के ईश्वर कहलाते, मनुज मात्र के आप्त रहे॥
विद्या के अद्भुत सागर हो, मन्त्र मुगध होते विद्वान।
सुधी जनों के ज्ञानाश्रय हो, अनुपम तेरा तत्त्व-ज्ञान॥

74.

गुरुदेव मेरे तुमको, भक्तों ने पुकारा है।[2]
आओ अब आ जाओ, इक तेरा सहारा है॥
गुरुदेव मेरे तुमको.....॥
है चारों तरफ छाया, मेरे घोर अँधेरा है,
अब जायें कहाँ, बोलो तूफानों ने घेरा है।
हे नाथ अनाथों कोऽऽ तेरा ही सहारा है,
गुरुदेव मेरे तुमको.....॥
सेवा गुरु चरणन की, मुक्ति भव तरणन की,
महिमा गुरु वर्णन की ग्याता शुभ कर्मन की।
गुरु ज्ञान संजीवन की बहती एक धारा है,
गुरुदेव मेरे तुमको.....॥
तेरे इन चरणों की धूली ही तो मिल जाये,
भटके हुए राही को निज मंजिल मिल जाये।
किस्मत भी चमक जाए जो चमके सितारा है,
गुरुदेव मेरे तुमको.....॥

ज्ञान रहा भण्डार तुम्हारा, सर्वश्रेष्ठ है आतम-ज्ञान।
अज्ञानी गर भव रहा तो, कर लेगा निश्चित कल्याण॥
हम सबके आराध्य तुम्हीं हो, बढ़े तुम्हीं से सम्यग्ज्ञान।
आप रहे जग में सर्वोत्तम, श्रमणोत्तम हमको वरदान॥

75.

(तर्ज - थोड़ा सा प्यार....)

आपके दर्शन पाकर आपकी शरणा आकर।
हमने पाया है सब कुछ, हे गुरु विद्यासागर॥
आपके.....॥ 1॥
निकले हो तुम तो घर से अपनी किस्मत बदलने।
देखकर तुमको गुरुवर, लगे हम भी सम्हलने॥
करते हो पावन सबको ऽऽऽ ज्ञान अमृत पिलाकर।
आपके.....॥ 2॥
वाणी लगती अति शीतल भींग जाता है अन्तष।
आपका रूप देखकर भाग जाते हैं कल्मष॥
सब पे करते हो जादू ऽऽऽ वीर सन्देश सुनाकर।
आपके.....॥ 3॥

76.

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे,
कोई न अपना, सिवा तुम्हारे।
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया, तुम्हीं हो बन्धु.....।
जो खिल सके ना वो फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना, तुम्हीं हो बन्धु.....।

77.

(तर्ज- चाँद-सी मेहबुबा होगी)

चाह यही है हृदय हो निर्मल
मन ये क्यों नहीं बदलता है
आप बतादो हमको गुरुवर
दिल ये क्यों नहीं बदलता है.....॥ टेक॥

हम जानते हैं ये जीवन तो, क्षण भर का उजियारा है,
ये सांस न जाने कब रुक जाये, आखिर सब को जाना है-2,
फिर भी फँसता जाए रे, मनवा ऐसा सब क्यों होता है।
आप बतादो हमको गुरुवर.....॥ 1॥
इस दिल का पागलपन कह दो, या कह दो मन की चालाकी,
कहनें को तो कहते हमेशा, बोलो अमृत मय वाणी-2
फिर भी चुभती बोले रे मनवा, ऐसा सब क्यों होता है।
आप बतादो हमको गुरुवर.....॥ 2॥
सुख देने से सुख मिलता है, कहते हैं हम हरदम ही,
पर देते हमेशा दुःख ही हैं, कैसी ही है ये नादानी-2
ना सोचे ना समझे ये मनवा, ऐसा सब क्यों होता है।
आप बतादो हमको गुरुवर.....॥ 3॥

तन भी सुन्दर मन भी सुन्दर, सुन्दरता की मूरत हो।
अमिताभा आकर्षित करती, तपो-तेज-मय-सूरत हो।
तेजो नाथ आप कहलाते, निखिल विश्व आश्रय-दाता।
करुणा धारक अनाथ नाथ हो, ज्ञानी हो हर क्षण गाता॥

78.

(तर्ज - तूने पायल है झनकाई)

तूने मानव जीवन पाया,
तू क्यों इस पर है इठलाया ऽऽऽ
अब तो, प्रभु शरण में तू जा,
रे मनवा प्रभु शरण में तू जा-2 ॥ टेक ॥

यहाँ सब झूठे रिश्ते सभी मतलब से पिसते,
ये दुनिया है बेगानी रे मनवा ओ ओ....,
तूने.....तेरी मेरी करके सारी जिन्दगी गवाई-2
अब तो..... ॥ 1 ॥

तू दिन और रात में जागे, तू धन के पीछे भागे,
ये माया काम न आनी, रे मनवा ओ ओ....,
तूने...झूठी शान बढ़ाई, फिर भी तेरे संग न जाई-2
अब तो..... ॥ 2 ॥

ये नर तन फिर न आये, गुरु ज्ञानी बतलाये,
तू अच्छे कर्म जो कर ले रे मनवा ओ ओ.....,
फिर भी...तेरे समझ न आई, प्रभुवर ने जो राह बताई-2
अब तो..... ॥ 3 ॥

गतिशील करो कदमों को मंजिल पास नहीं।
काल चक्र गतिमान किसी का दास नहीं॥
जीवन के हर क्षण को सार्थक कर डालो तुम।
साँसों का पलभर भी विश्वास नहीं है॥

79.

जाने वाले एक संदेशा गुरुवर से तुम कह देना।
भक्त तुम्हारी याद में रोये उसको दर्शन दे देना॥ ध्रु॥
जिसको गुरुवर दर पे बुलाते किस्मत वाले होते हैं,
जो उनसे कभी मिल नहीं पाते वो छुप-छुप कर रोते हैं,
जितनी परीक्षा ली है मेरी उतनी हिम्मत भी देना।
भक्त तुम्हारी..... ॥ 1 ॥

तूने कौन-सा पुण्य किया है दर पे तुझे बुलाया है,
मैंने कौन-सा पाप किया है दिल से मुझे भुलाया है।
एक बार मुझे दरपे बुला दो इतनी कृपा कर देना,
भक्त तुम्हारी..... ॥ 2 ॥

कहना उनसे मन मंदिर में मैंने उन्हें बिठाया है,
गुरु रूप में परम ब्रह्म को आपको मैंने पाया है,
आशा केवल एक यही है मुक्ती मार्ग दिखला देना।
भक्त तुम्हारी..... ॥ 3 ॥

आगम रक्षक कुशल परीक्षक, तत्त्व-ज्ञान दे शिष्यों को।
साकार किया आगम जीवन में, और कराया शिष्यों को॥
जैनागम के तुम्हीं देवता, और हमें संयमदाता।
आगम जैसी रक्षा करना, विनती तुमसे परित्राता॥

80.

(तर्ज - कसमें वादे .....)

चंद दिनों का जीना रे बंदे, कैसे कर्म कमायेगा।
विषयों में आनंद मनाये, अंत समय पछतायेगा॥
चंद..... ॥ टेक॥

आखिर तेरा होगा जाना, कोई न साथ निभायेगा।
तेरे कर्मों का फल बंदे, साथ तेरे ही जायेगा॥
धन दौलत से भरा खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
चंद..... ॥1॥

दया धर्म संयम के द्वारा, मुक्ति मंजिल पायेगा।
तेरे त्याग की अमर कहानी, सारा जमाना गायेगा॥
चिंतन करले इन बातों का जन्म सफल हो जायेगा।
चंद..... ॥2॥

चेतन हैं माटी का नश्वर, माटी में मिल जायेगा।
मुट्ठी बांधे आया जग में, हाथ पसारे जायेगा॥
ज्ञानी जन कहते हैं सुन ले, गया वक्त न आयेगा।
चंद..... ॥3॥

कैसे-कैसे आये यहाँ पर, कोई नहीं रह पाया है।
अपनी-अपनी आयु बिताकर, सबने डेरा उठाया है॥
कर ले नेक कमाई जाने, कब डेरा उठ जायेगा।
चंद..... ॥4॥

81.

(दया कर दान भक्ति का...)

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहीं चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य की तेरी सदा आँखों में रहती है॥

निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की नासा की अनी पर से गुजरती है॥

नहीं कर्मों का डर मुझको कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, कर्म रेखा बदलती है॥

मिले गर स्वर्ग की संपत्ति अचम्भा कौन सा इनमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे गति, दुर्गति की टलती है॥

अनेकों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखी।
शांति मूरत तुम्हारी सी, नहीं नजरों में चढ़ती है॥

जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश तो दीजै।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है॥

पूजा करता करता प्राणी, दुनिया से पुजने लगता है।
भगवान स्वयं बन जाता है, जब ऊपर उठने लगता है॥

82.

स्वर्ग से सुंदर, सपनों से प्यारा है गुरुवर का द्वार।
बना रहे आशीष आपका, आए गुरु के द्वार॥
गुरु का द्वार न छूटे, चरण की छाँव न छूटे।

मात-पिता तुम मेरे सच्चे गुरु हमारे।
तुमसे मिला है जीवन तुम हो भगवान हमारे॥
कहाँ मिलेगी इतनी ममता इतना प्यार दुलार।
गुरु का द्वार न छूटे, चरण की छाँव न छूटे॥ 1॥

सूनी जीवन की बगिया को आकर के महकाया।
फूल खिलाये सौरभ देकर काँटों से है बचाया॥
जन्म-जन्म भर के जीवन में दिशा बोध अब पाया।
गुरु उपकार न भूले सभी मिल चरणा छूले॥ 2॥

ज्ञान दिवाकर की लाली, सब जग में बिखराई।
चंदन सी शीतलता दे जन जन ताप मिटाई॥
समोशरण की अद्‌भुत महिमा का दर्शन करवाया।
गुरु उपकार न भूले, सभी मिल चरणा छूले॥ 3॥

भावों की भीगी कलियाँ गुरु चरणों में लाए।
करके श्रद्धा है गुरुवर महिमा तेरी गाये॥
मुक्ति मंजिल देने वाली है विश्वास हमारा।
गुरु की शरण में आए, शरण में हम रह जाए॥ 4॥
स्वर्ग से सुंदर, सपनों से प्यारा है गुरुवर का द्वार।

83.

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान बाबा 2..... कर तू प्रभु॥
काँटों में भी जीवन तेरा फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जायेगा॥
खुद को तू पहचान बाबा.....॥ 1॥
धन वैभव और महल खजाना कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में सांझ समय मुरझायेगा॥
कर ले धर्म ध्यान बाबा.....॥ 2॥
मात-पिता और बड़ों का आदर धर्म मार्ग पर चलो सदा।
गुरुओं की नित सेवा करना श्रावक का कर्तव्य कहा॥
पाओगे सम्मान बाबा .....॥ 3॥
हिंसा झूठ कुशील परिग्रह चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक पुण्य प्रकाशक णमोकार का जाप करो॥
होवे सम्यग्ज्ञान बाबा .....॥ 4॥
कभी किसी का दिल दुःख जाये ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मलहम बन जाये ऐसे बोल बड़े अनमोल॥
कहलाता है ज्ञान बाबा .....॥ 5॥

आदमी हो प्रेम की गंगा बहा के देखो।
सुख मिले अनुपम यहाँ आके देखो॥
जायेंगे धुल पाप सभी जनम-जनम के।
एक बार विद्यासागर में नहा के देखो॥

84.

(दिल के अरमा.....)

व्यर्थ हर पल जिंदगी का जा रहा।
सारा जीवन यूँ ही बीता जा रहा॥
तुझको अमृत भी मिला पर न पिया।
विष को तू मदहोश पीता जा रहा॥
सारा जीवन यूँ.....॥ 1॥
तू रहा विषयों में सुख को खोजता।
काँटों से फूलों की खुशबू चाह रहा॥
सारा जीवन यूँ.....॥ 2॥
अपने दु:ख से तू नहीं इतना दुखी।
दूसरों का सुख न देखा जा रहा॥
सारा जीवन यूँ.....॥ 3॥
औरों का दिल जीतेगा कैसे भला।
तुझसे अपना दिल न जीता जा रहा॥
सारा जीवन यूँ.....॥ 4॥

काया बूढ़ी हो चली, तृष्णा हुई जवान।
ऐसे में कैसे करुँ, निज आतम कल्याण॥

जब हम आये जगत में, जगत हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, आगे हँसी न होय॥

85.

दुनिया में रहने वाले क्या तुझको ये खबर है।
दो दिन की जिन्दगी है पलभर का ये सफर है॥
जीना वो चाहते थे, वो भी तो जी न पाये,
घर बार छोड़कर सब, मिट्टी में जा समाये,
कल तेरा मेरा अपना, अंजान में असर है।
दो दिन की जिन्दगी है .....॥ 1॥
जब मौत ने पुकारा कुछ भी न काम आया,
जाते हुए को देखो कोई न रोक पाया,
सच्चाई से तू इसकी, क्यों आज बेखबर है।
दो दिन की जिन्दगी है .....॥ 2॥
मत नाजकर तू पगले सहबाब दोस्तों पर,
लौटायेंगे, ये तुझको बस खाक में मिलाकर,
तेरा वहाँ न कोई हरदम न हम सफर है।
दो दिन की जिन्दगी है .....॥ 3॥
मरने के पहले अपने गुनाह से कर ले,
अंजान मान जाये राहें खुदा पर चल दे,
मरने के बाद तेरा मुश्किल बहुत सफर है।
दो दिन की जिन्दगी है .....॥ 4॥

जिस काया की चाकरी, तू करता दिन रात।
क्या वह मरते वक्त भी, दे पायेगी साथ॥

86.

(तर्ज- सायोनारा.....)

जय बोलो जय बोलो जैन धर्म की जय बोलो।
दुनियाँ के हर कोने से सब मिलकर जय बोलो॥ टेक॥
ये वो शीतल छाया है नहीं यहाँ छल माया है।
सत्य अहिंसा यही धर्म है यही सभी को भाया है॥
जय बोलो जय बोलो॥

महावीर की ये वाणी सारी दुनियाँ ने मानी।
जिओ सभी को जीने दो मत करना तुम मनमानी॥
जय बोलो जय बोलो॥

त्याग तपस्या सब करते निशादिन जिनवर को भजते।
ॐ णमो अरिहंताणं महामंत्र सुमरन करते॥
जय बोलो जय बोलो॥

धर्म का झंडा लहराये, कभी नहीं झुकने पाये।
श्रमण शिरोमणि जी हम सबको वरदान दो॥
जय बोलो जय बोलो॥

तीन काल के जिनवरा, तीन काल के सिद्ध।
तीन काल के मुनिवरा, बदूँ जगत् प्रसिद्ध॥

आज सरीखी शुभ घड़ी, जाने फिर कब आय।
जीवन के किस मोड़ पर, घटना क्या घट जाये॥

87.

करना मन ध्यान महामंत्र णमोकार।
पहिली बार बोलो मन णमो अरिहंताणं 2॥
होवे पाप का नाश महामंत्र णमोकार-2॥ 1॥

दूजी बार बोलो मन णमो सिद्धाणं-2
होवे आतम ज्ञान महामंत्र णमोकार-2॥ 2॥

तीजी बार बोलो मन णमो आयरियाणं-2
होवे गुरु का ज्ञान महामंत्र णमोकार-2॥ 3॥

चौथी बार बोलो मन णमो उवज्झायाणं-2
होवे ज्ञान विकास महामंत्र णमोकार-2॥ 4॥

पाँचवी बार बोलो मन णमो लोए सव्वसाहूणं-2
होवे भव से पार महामंत्र णमोकार-2॥ 5॥

मैं नन्हा बालक प्रभो, नहीं मुझमें कुछ ज्ञान।
मेरे उर में आ बसो, कृपा सिंधु भगवान॥

आया है क्या साथ में, जायेगा क्या साथ।
काल बलि जब आयेगा, खाली होंगे हाथ॥

धर्म धर्म सब ही कहे, धर्म ना जाने कोय।
प्रेम और समता बिना, धर्म कहाँ से होय॥

88.

लिखा है ऐसा लेख भईया लिखा है ऐसा लेख।
मेरे दोनों हाथों में ऐसी लकीर है-2
बाबा से मिलन होगा ऐसी तकदीर है॥

किस्मत का लिखा कोई मिटा नहीं सकता।
मिलेगा कहाँ वो कैसा समय ही बतायेगा॥
हाथों में उल्लेख इसका हाथों में उल्लेख॥ 1॥

लिखता है लिखने वाला कर्मों का लेखा।
लकीरों में लिखी है रे कर्मों की रेखा॥
इसमें मीन न मेख भैया इसमें मीन न मेख॥ 2॥

मैंने तो किया है खुद को उसके हवाले।
वही दयावान स्वामी मुझको संभाले॥
उसने खींची रेख रे भैया उसने खींची रेख॥ 3॥

यौवन है जब रूप है, ग्राहक हैं सब लोग।
यौवन रूप गंवाय के, बात न पूछे कोय॥

कम खाना कम सोवना, कम दुनिया से प्रीत।
गम खाना कम बोलना, यही बड़न की रीत॥

मन मैला तन ऊजला, यह बगुला की रीत।
यासे तो कौआ भला, भीतर बाहर एक॥

89.

जीवन का रहस्य

जीवन है दीपक की ज्योति, कब बुझ जाए रे।
घटना, दुर्घटना कब क्या घट जाए रे॥
मन्दिर में न गया कभी, प्रभु भजन न किया कभी।
बातें यूँ ही वर्ष कई-2, णमोकार को जपा नहीं॥
स्वाध्याय को किया नहीं, मुक्ति की मंजिल तू कैसे पाए रे।
जीवन है.... ॥ 1॥
गुरुओं से ये दूर रहा, कषायों से भरपूर रहा।
अभिमान में चूर रहा-2, यह मन कितना मैला॥
तन मिट्टी का चोला है, मिट्टी का चोला यह कब मिट जाए रे।
जीवन है.... ॥ 2॥
अस्थिर जग की माया है, मिटने वाली काया है।
सुख दुःख की इसकी छाया है-2, क्यों इसमें भरमाया है॥
कहाँ-कहाँ से लाया है, तेरी ये माया तेरे साथ न जाए रे।
जीवन है..... ॥ 3॥
ठाट पड़ा रह जाएगा, कोई काम न आएगा।
कोई साथ न जाएगा-2, क्यों मद में तू फल रहा॥
क्यों अपने को भूल रहा, आतम का पंछी ये कब उड़ जाए रे।
जीवन है..... ॥ 4॥

समझाने में नहीं, है समझे में सार।
समझाने वाले कई, पड़े बीच मझधार॥

90.

(तर्ज - होठों से छूलो)

है दीक्षा का ये दिन, बांधा संयम बंधन।
दे दो गुरुवर आशीष, बन जाये तुम सम हम॥
ना चाह किसी की है, ना रिश्तों का बंधन।
तेरे चरणों में ही किया, तन मन धन सब अर्पण॥
दे दो गुरुवर आशीष.....॥ 1॥
ये जगत का सूनापन, कही दिखे ना अपनापन।
घबराता था ये मन नहीं दिखे सही जीवन॥
अब तेरी शरण को पा मिल जाये अमर जीवन॥
दे दो गुरुवर आशीष.....॥ 2॥
ये जग की माया है, सब कुछ छिन जाता है।
समझाया तुम्ही ने गुरु, कोई साथ न जाता है॥
पाये तुमसा जीवन, अब तेरी दया से हम॥
दे दो गुरुवर आशीष.....॥ 3॥
आराध्य तुम्ही गुरुवर रिश्ता है सदियों का।
जैसे रिश्ता होता सागर से नदियों का॥
हो आज्ञा का पालन कर दो अब ऐसा मन।
दे दो गुरुवर आशीष.....॥ 4॥

नश्वर है धन सम्पदा, नश्वर है सम्मान।
नश्वर है नाते सभी, नश्वर है तन प्राण॥

91.

(ओ बुंदेली के देवता)

जिनशासन के उपकारी गुरुवर विद्यासागर है महान्।
आचार्य श्री हितकारी ज्ञान के सागर गुरुवर है महान्॥ धृ॥
सदलगा ऽऽ में जन्म लिया है, कर्नाटक भी धन्य हुआ है।
मलप्पा श्रीमंती अंगण या मुक्ति का गगनांनग॥
विद्याधर से बने मुनि विद्यासागर गुरुवर है महान्॥ 1॥

अजमेर ऽऽ ये गुरु ज्ञानसागर मुनि दीक्षा ली विद्याधर।
दीक्षा शिक्षा गुरुपद पाकर बन श्रमण जगत के दिवाकर॥
गुरुवर निर्ग्रन्थ नायक दीक्षा देकर करते जग कल्याण॥ 2॥

सन् अड़सठ ऽऽ में मुनिपद पाकर सन् बहत्तर में गुरुपद पाकर।
बनकर बीसवी सदी में सन्त लिखकर मूकमाटी महाग्रन्थ॥
मुनि आचार्य पद की गरिमा तुम से जाती है जहान॥ 3॥

भारत क्या ऽऽ विश्व ही सारा तव चरणों पर है बारा।
हो मूल संघ के नायक हो जैनधर्म उन्नायक॥
बालयतियों का संघ बनाया तुमने जिनशासन की शान॥ 4॥

कोपरगाँव ऽऽ आप पधारो हम सबके भाग्य सम्हारो।
हम गावे गुरुवर गाथा, चरणों में झुका के माथा॥
ऐसे गुरुवर के कोमल, पद धरती पर है तीरथ के समान॥ 5॥

92.

भव सागर में दुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों।
शरण में आके सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों॥

सच कहता हूँ मेरे भगवन्, नहीं प्रेम से आया हूँ।
विपदाओं ने मुझको घेरा, व्यथा सुनाने आया हूँ॥
गरमी जिसको नहीं सताये, वृक्ष के नीचे जाता क्यों।
शरण में आके सुख न मिलता .....॥ 1॥

जो कुछ भी मैं सुना रहा हूँ, वह मेरी मजबूरी है।
जो कुछ करना चाहो करलो, करना बहुत जरूरी है॥
दूध यदि माँ नहीं पिलाये, बच्चा रुदन मचाता क्यों।
शरण में आके सुख न मिलता .....॥ 2॥

तुम तो भगवन् सुख के सागर, दो बूँदें मिल जायेंगी।
जाने वाली अन्तिम श्वांसें, कुछ पल को रुक जायेगी॥
नदियों में यदि जल न होता, हंस बैठने आता क्यों।
शरण में आके सुख न मिलता .....॥ 3॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना दीखा कोय।
दिल जो खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

जो सोया हो नींद में, उसे जगाया जाय।
जाग के भी जो सो रहा, बाको कौन जगाय॥

93.

मोह जाल में फँसे हुए हैं कर्मों ने आ घेरा।
कैसे तिरेंगे भवसागर से तुम बिन कौन हमारा।
भूल हुई क्या हमसे भगवन क्या है दोष हमारा।
लिखा विधाता शुभ घड़ियों में ऐसा लेख हमारा।
लेख लिखा था शुभ घड़ियों में शुभ घड़ियाँ हैं आयीं।
आत्म ज्ञान की ज्योति जगा दो भव से पार उतरना है।
पहले वृषभनाथ जिन-जिन वन्दों दूजे अजितनाथ देवजी।
तीसरे संभवनाथ जिन-जिन वन्दों चौथे अभिनन्दन देवजी।
पाँचवें सुमतिनाथ जिन-जिन वन्दों छटे पद्मप्रभ देवजी।
सातवें सुपारसनाथ जिन-जिन वन्दों आठवें चन्द्रप्रभ देवजी।
मोह जाल में फँसे हुए हैं .....॥
नवमें पुष्पदंत जिन-जिन वन्दों दसवें शीतलनाथ देवजी।
ग्यारवें श्रेयांसनाथ जिन-जिन वन्दों बारहवें वासुपूज्य देवजी।
तेरहवें विमलनाथ जिन-जिन वन्दों चौदहवें अनंतनाथ देवजी।
पंद्रहवें धर्मनाथ जिन-जिन वन्दों सोलहवें शान्तिनाथ देवजी।
मोह जाल में फँसे हुए हैं .....॥
सत्रहवें कुन्थुनाथ जिन-जिन वन्दों अठारहवें अरनाथ देवजी।
उन्नीसवें मल्लिनाथ जिन-जिन वन्दों बीसवें मुनिसुव्रत देवजी।
इक्कीसवें नमिनाथ जिन-जिन वन्दों बाईसवें नेमिनाथ देवजी।
तेईसवें पारसनाथ जिन-जिन वन्दों चौबीसवें महावीर देवजी।
मोह जाल में फँसे हुए हैं .....॥

94.

(तर्ज- जहाँ डाल डाल पर सोने की.....)

जिनका पावन दर्शन पाने, चरणों में आए चेरे।
वो पारस प्रभुवर मेरे।
वो पोष वदी दशमी का शुभ दिन, प्रभु धरती पर आए।
वो धन्य हुई माता वामा, पितु अश्वसेन हरषाए।
नयनों में रास रचाये प्रभु खुशियों के फूल बिखेरे॥
वो पारस प्रभुवर मेरे।
वह कमठ तपस्वी अभिमानी प्रभु ने उसका तप परखा।
धूनि में जलते नाग-युगल को पारस प्रभु ने निरखा।
करुणा के आँसू बहे प्रभु के तापस लगे सपेरे॥
वो पारस प्रभुवर मेरे।
प्रभु ने उपदेश सुनाया, स्वर्गों का राज दिलाया।
प्रभु चरणों के वे परम पुजारी सबने शीश नमाया।
करुणा दृष्टि की ललित विभा, बरसादो सिर पर मेरे॥
वो पारस प्रभुवर मेरे।

गल्फवाद में दिन गया, टी.वी. देखत रात।
भोंदू के भोंदू रहे, रात दिना समझात॥

मिथ्यादृष्टि जीव को, जिनवाणी न सुहाय।
कै ऊँघे कै गिर पड़ै, कै उठ घर को जाय॥

95.

दुःख से घबराओ नहीं मेरे साथी।
ये जीवन में मानव का शृंगार है।
सुख में व्यसन प्रमाद भरे हैं।
दुःख पापों से करता खबरदार है॥ 1॥
सुख से मिटता यदि ये आवागमन।
तीर्थंकर नहीं तजते संसार को॥
सुख के साधन सभी छोड़ जाये वन में।
मोक्ष पाने का दुःख ही तो आधार है॥ 2॥
जो पुरुषार्थ से मुख मोड़े नहीं।
दुःख की कसौटी पर उतरा खरा॥
दुःख की ज्वाला में पड़के जो धीर-धरे।
सुख पाने का सच्चा ओ हकदार है॥ 3॥
सुख में रहते है देखो सब सगे।
पास आते नहीं जब दुःख आ पड़े॥
तुम देखों परख कर दुःख में इन्हें।
साहस धर्म मित्र और नार है॥ 4॥
पाप कर्मों का होता है जब-जब उदय।
भोगना दुःख पड़ता है उस ही समय॥
ये ऋषी और मुनि कहते आये सभी।
अच्छा कर्म करो सबको हितकर है॥ 5॥

96.

जिन धर्म के प्यारे लोगों, जब सुनलो अमर कहानी।
तुम भूल गए थे जिनको, अब याद करो कुर्बानी॥
वह सेठ सुदर्शन जिनको रानी ने कलंक लगाया।
शूली पर चढ़कर उसने महामंत्र का ध्यान लगाया।
शूली का बना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी।
तुम भूल गए थे जिनको.....॥ 1॥
बाईस वर्ष सति अंजना की, प्रियतम से हुई जुदाई।
एक पल प्रियतम को पाया, तूफान की आँधी आयी।
घर छोड़ वन से भटकती, उसकी यह अमर कहानी।
तुम भूल गए थे जिनको.....॥ 2॥
बाहुबली ये भरत के भाई, आपस में लड़ी लड़ाई।
बाहुबली ने जीत लिया था, पर लाज भाई को आई।
तज वैभव बन गए योगी, वो वीर ये स्वाभिमानी।
तुम भूल गए थे जिनको.....॥ 3॥

जिनके पावन चरणों की रज भी चंदन बन जाती है।
जिनके आचरणों की महिमा सारी सृष्टि गाती है॥
कई जन्मों का पुण्य सिमट कर आया है इन बूँदों का।
ऐसे गुरुवर के चरणों का जो गंधोदक बन जाती हैं॥

97.

(तर्ज- जिया कब तक....)

जहाँ नेमि के चरण पड़े, गिरनार की धरती है।
ओ प्रेम मूर्ती राजुल, उस पथ पर चलती है॥
राजुल की आँखों से झर-झर झरता पानी।
अंतस में भाव भरे, प्रभु दरश की दीवानी।
मन मन्दिर में जिसकी, तस्वीर उभरती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े....॥ 1॥
उस कोमल काया पर, हल्दी का रंग चढ़ा।
मेंहदी भी रची राचीऽऽ गल मंगल सूत्र पड़ा।
पर माँग न भर पायी, यही बात अखलती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े....॥ 2॥
सुन पशुओं का क्रन्दन, तुमने तोड़े बन्धन।
जाना वैराग्य का तभी धारा प्रभु पथ पावन।
उस परम वैरागी को चिर प्रीत उमड़ती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े....॥ 3॥
राजुल की पीड़ा को नेमि न समझ पाया।
स्तंभ खड़ी राजुल, जाए तो कहाँ जाये।
श्रृंगार हुए सोलह विरहन सी सिसकती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े....॥ 4॥
स्वामी जिस ओर गए वहीं मेरा ठिकाना है।
जीवन की यात्रा का, वो पथ सुलझाना है।
लख चरण चन्द्र प्रभु के राजुल अब रुकती है।
जहाँ नेमि के चरण पड़े....॥ 5॥

98.

नाम तिहारा तारण हारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा॥ टेक॥
सुरनर मुनिजन, तुम चरणों में, निशदिन शीश झुकाते हैं।
जो गाते हैं, तेरी महिमा, मन वांछित फल पाते हैं।
नाम तिहारा तारण हारा.....॥ 1॥
धन्य घड़ी, समझूँगा जिस दिन, जब तेरा शरणा होगा।
दीन दयाला, करुणा सागर, जग में नाम तुम्हारा है॥
नाम तिहारा तारण हारा.....॥ 2॥
भटके हुए, हम पथिकों का, प्रभु तू ही एक सहारा है।
भव से पार, उतरने को, तेरे गीतों का सरगम होगा॥
नाम तिहारा तारण हारा.....॥ 3॥

तुमने तारे, लाखों प्राणी, ये संतों की वाणी है।
तेरे छवि पर, मेरे भगवन, ये दुनियाँ दीवानी है॥
झूम झूम तेरी पूजा रचावे, मंदिर में मंगल हो।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा॥ 4॥

हम मन की मुरादें, लेकर स्वामी, तेरी शरण में आये हैं।
हम हैं बालक, तेरे चरण के, तेरे ही गुण गाते हैं॥
भव से पार उतरने को तेरे, गीतों का सरगम होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा॥ 5॥

99.

प्राणी रंगसु तरंग मिल जाय, गुणारी जोड़ी न मिले।
कागा कोयल एक रंगरो बैठो एक हि डाल।
कागो तो कड़वो बोले हैं, कोयल रस बरसाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
हंसो बगुलो एक सरीखो, नाहीं पड़े रे पहचान।
हंसो तो मोती चूगे है, बगुलो तो मछुली खाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
केसर हल्दी एकहि रंगरी नाहीं पड़े रे पहचान।
हल्दी तो सांगर सीजे है, केसर तिलक लगाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
अर्थी डोली एक ही बांसरी एक कांधे जाय।
डोली तो दुल्हन ले जावे, अर्थी तो मरघट जाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
रावण भीषण एक ही कुणवो एक ही मात पिता।
विभीषण तो राम भगत हो, रावण कुल को लजाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
त्यागी भोगी एकहि घर में, एकहि खाणो खाय।
त्यागी तो करमन काटे है, भोगी तो करम लगाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
भांगरी मेंहदी एकहि रंगरी, एकहि हाथ पिसाय।
मेंहदी तो हाथ रचावे, भांग तो जगत् नचाय।
गुणारी जोड़ी न मिले।
संत मुनिवर कह गया सगला, करो गुणारी पहचान।
रंग तो एक दिन फीको पड़सी है, आतम रंग न जाय।

100.

समकित से कब निज आतम का शृंगार करोगे।
संयम की तरणी ले भवजल पार करोगे॥
सुन चेतन ज्ञानी क्यों बात न मानी।
आया कहाँ से जाना तुझको कितनी दूर है।
सोचा नहीं विषयों में तू क्यों इतना चूर है॥
जप तप बिन नरभव की घड़िया बेकार करोगे॥
समकित से कब निज.....॥ 1॥
लगते हैं तुझको भोग के साधन जो सुहाने।
लुटवाता है इन गलियों में सद्गुण के खजाने॥
ऐसी गलती जीवन में कितनी बार करोगे॥
समकित से कब निज.....॥ 2॥
कल्याण यदि चाहो तो आत्मा को जान लो।
अपने का और पराये का अन्तर पहचान लो॥
जड़ कर्मों की बोलो कब तक दरकार करोगे॥
समकित से कब निज.....॥ 3॥
पग पग में भूल भुलैया हैं ये दुनिया की राहें।
पथभ्रष्ट बनाती तुझको कंचनकामिनी की चाहे॥
बदनाम पथिक होवे यदि जग की धार बहोगे॥
समकित से कब निज.....॥ 4॥

101.

नर तन रतन अमोल, इसे पानी में मत डालो[2]
तीरथ कर लो पुण्य कमालो, प्रभु के गुण गालो।
चलो सम्मेद शिखर चालो॥
तीरथ करलो.....॥
उतरत चढ़त पहाड़ न चंचल मन इत उत डोले,
बूढ़ो बालक एक ही स्वर में, जय पारस बोले।
कैसा मधुवन लासानी,
शीतल और गंधर्व नदी को अमृत सो पानी,
वहाँ जल पी के शांति पा लो॥
तीरथ करलो.....॥ चलो जी कुण्डलपुर चालो,
नन्द्यावर्त भवन में प्रभु को त्रिशला ने जायो,
संगम देव ने हार मान के कांधे बिठलायो।
यही सिद्धार्थ की रजधानी,
तीन हुए कल्याण वीर के उपजी जिनवाणी,
दरश महावीरा का पा लो॥
तीरथ करलो.....॥

सत्य अहिंसा धर्म हमारा, णमोकार हमारी शान है।
महावीर जैसा नायक पाया, जैन हमारी पहचान है॥
सो गर्व से कहो हम जैन हैं।

102.

ओ प्यारे परदेसी पंछी इक दिन तू उड़ जायेगा।
तेरा प्यारा पिंजड़ा पीछे यहाँ जलाया जायेगा॥

इस पिंजड़े को तूने प्यारे, पाला पोसा प्यार से।
खूब खिलाया खूब पिलाया, हरदम रखा संभालके।
तेरे होते होते नीचे इसे सुलाया जायेगा॥

देखे बिना तरसती आँखें रहना चाहती साथ में।
तेरे बिना न भोजन करती तू ही था हर बात में।
तुझसे पूछे बिना ही सारा काम चलाया जायेगा॥

रोयेंगे थोड़े दिन तक ये, फिर भूलेंगे बाद में।
ज्यादा से ज्यादा इतना, कुछ करवा देंगे याद में।
हलवा पूड़ी खिलाके तेरा तीजा मनाया जायेगा॥

तुझे पता है क्या कुछ होता, तू फिर क्यों नहीं सोचता।
मूरख वह दिन भी आयेगा पड़ा रहेगा रोवता।
हीरा जनम अमोलक खोकर फिर पीछे पछताये॥

अच्छे लोग एक फूल की तरह होते हैं।
जिसे हम तोड़ भी नहीं सकते और छोड़ भी नहीं सकते।
तोड़ दिया तो मुरझा जायेगा और
छोड़ दिया तो कोई और ले जायेगा॥

103.

ममता की पतवार न तोड़ी आखिर को दम तोड़ दिया।
इक अनजाने राही ने शिवपुर का मारग छोड़ दिया॥

नर्क में जिसने भावना भायी मानव तन को पाने की।
भेष दिगम्बर धारण करके मुक्ति पथ अपनाने की॥
लेकिन देखो आज ये हालत ममता के दीवाने की।
चेतन होकर जड़ द्रव्यों से कैसा नाता जोड़ लिया॥

ममता के बंधन में बंधकर क्या युग-युग तक सोना है।
मोह अरी का सचमुच इस पर हो गया जादू टोना है।
चेतन क्या नरतन को पाकर अब भी यों ही खोना है।
मन का रथ क्यों शिवमारग से कुमारग को मोड़ दिया॥

मत खोना दुनिया में आकर ये बस्ती अनजानी है।
जायेगा हर आने वाला जग की रीति पुरानी है॥
जीवन बन जाता यहाँ पंकज सबकी एक कहानी है।
चेतन निज स्वरूप देखा तो दुःख का दामन तोड़ दिया॥

तप त्याग तपस्या में शीर्ष मान हैं गुरु,
समता में सूर्य चन्द्र के समान हैं गुरु,
करुणामयी मुस्कान वात्सल्य विभूषित,
सच मानिये इस रूप में भगवान हैं गुरु।

104.

जिनधर्म है आदि जिनेश्वर का,श्री पार्श्व महावीर स्वामी का।
जिनधर्म का भैय्या क्या कहना, जो पाले उसका क्या कहना॥

यहाँ जिनवाणी का चिन्तन है, ज्ञानी करते यहाँ मन्थन है।
सब ज्ञानी रहते मस्ती में, ज्ञानी देखो सब अस्ती में॥

निर्ग्रन्थ गुरु की वाणी है, जिनसे प्रगटी जिनवाणी है।
झरने झरते यहाँ आनन्द के, आतम से प्रगटे आनंद के॥

यहाँ समयसार का चिन्तन है, यहाँ नियमसार का मन्थन है।
यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में, मस्ती है सबकी अस्ती में॥

अस्ती में मस्ती ज्ञानी की, यह बात है भेदविज्ञानी की।
यहाँ झरते हैं झरने आनन्द के, आनंद ही आनंद आतम में॥

यहाँ बाहुबली से ध्यानी हुए, यहाँ कुन्दकुन्द से ज्ञानी हुए।
उपकारक गुरु ने यह बोला है, जैनधर्म ही अनमोला॥

गर चाहते हो देखना हमारे गुरुवर के स्थान को।
तो जाओ पहले कम करके आओ तुम अपने सामान को॥
अगर देखना चाहते हो हमारे गुरुवर की उड़ान को।
तो जाओ पहले ऊँचा करके आओ तुम आसमान को॥

105.

अब सौंप दिया इस जीवन को, भगवान तुम्हारे चरणों में।
मैं हूँ शरणागत प्रभु तेरा रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

मेरा निश्चय बस एक यही, मैं तुम चरणों का पुजारी बनूँ।
अर्पण कर दूँ दुनियां भर का सब प्यार तुम्हारे चरणों में॥

जो जग में रहूँ ऐसे रहूँ ज्यूं जल में कमल का फूल रहे।
है मन वच काया हृदय अर्पण भगवान तुम्हारे चरणों में॥

मैं निर्भय हूँ तुझ चरणों में आनन्द मंगल है जीवन में।
आतम अनुभव की सम्पति प्रभु मिल गई है तुम चरणों में॥

मेरी इच्छा है बस एक प्रभु इक बार तुझे मिल जाऊँ मैं।
इस सेवक की हर रग का हो तार तुम्हारे हाथों में॥

न पंचमकाल ये होता, न भौतिक यंत्र ये होते।
नहीं ब्रह्माण्ड ये होता, न ज्योतिष मंत्र ये होते॥
समुन्दर सूख ही जाता, जमाना जल गया होता।
अगर धरती पे इन जैसे दिगम्बर संत न होते॥

106.

आये हैं हम अकेले जाना हमें अकेले।
सुख दु:ख भरी गली में, रहना हमें अकेले॥

ये झिलमिलाती आशा, देखो छिपी निराशा।
बरबाद कर रही है दुनियाँ ये विपाशा॥
चलते सदा रहेंगे दुनियाँ के झमेले रे॥

आयेगा मौत का जब घर में तेरे तकाजा।
उठ जायेगा जहाँ से मायूस हो जनाजा॥
अर्थी पे बैठा करके चल देगा तू नवेले रे॥

यदि जग के इन दुखों से छोड़ा न दिल लगाना।
नरकों में ही मिलेगा तुझको पथिक ठिकाना॥
बस धर्म की कमाई ही साथ में तू ले ले रे॥

न जलते दीप से पूछो कि बाकी तेल कितना है।
न जाती श्वास से पूछो कि बाकी खेल कितना है॥
अगर जो पूछना है तो पड़ी उस अर्थी से पूछो।
सफर में वेदना कितनी कफन में चैन कितना है॥

107.

आये हो मेरी इस धरा पर, जिनधर्म धार करके।
पापों की ये गठरियाऽऽऽ, फेंको उतार करके॥
आये .....॥ टेक॥
संसार असार जाना, इसका बना दीवाना।
इक दिन पड़ेगा जाना, इस बात को न माना॥
जाना पड़ेगा इक दिन, चोला उतार करके।
पापों की ये गठरियाऽऽऽ, फेंको उतार करके॥
आये .....॥ 1॥
दुनियां है बहता पानी, इसकी यही कहानी।
डूबेगी एक दिन तो, नैया हई पुरानी॥
रोयेगा भव भ्रमण में, तट को निहार करके।
पापों की ये गठरियाऽऽऽ, फेंको उतार करके॥
आये .....॥ 2॥
जिनदेव करुणाकारी, राहें दिखा रहे हैं।
मुक्तिपुरी का रस्ता, हमको बता रहे हैं॥
शुद्धात्म भावना से, देखो विचार करके।
पापों की ये गठरियाऽऽऽ, फेंको उतार करके॥
आये .....॥ 3॥
ये धर्म ही जगत में, धारो तो सुख दिलाये।
धारण जिन्होंने कीना, वो सिद्ध धाम पाये॥
अंजन सहारा लीना फेंको उतार करके।
पापों की ये गठरियाऽऽऽ, फेंको उतार करके॥
आये .....॥ 4॥

108.

जिनवर जिनवर रटले प्यारे जाती है उमरिया।
अविचल पथ पर पग तूं रख रे, सीधी यह डगरिया॥

दुनियाँ के विषयों में फँसकर जीवन को क्यों हारता।
मिला तुझे अनमोल समय है, कुछ भी क्यों न विचारता॥
पापों से क्यों भरता अपनी आतमरूप गगरिया॥

जाल सुनहरी बिछा हुआ है, लोभ मोह और मान का।
फन्दे में मत आना इसके बैरी है यह जान का॥
वरना फिर पछतायेगा तू आखिर में बावरिया॥

बेदर्दी विकराल काल ने, होश है संसार को।
पटले पार उतारे नैया भैया जप नवकार को॥
बाँध ले सुमरन पे तू चन्दन, अपना रे कमरिया॥

जख्म उभरते हैं तो निशान छोड़ जाते हैं।
तूफान उठते हैं तो मकान तोड़ जाते हैं॥
आने जाने वालों की बात क्या कहूँ मित्रों।
गुरुवर जहाँ भी जाते हैं, अपनी पहचान छोड़ जाते हैं॥

109.

मेरी साधना के सुर सुमन, तेरी वन्दना में है नमन।
मेरी रागनी की हर किरण-तेरी वन्दना में है नमन॥
मेरा हर भजन-2

तेरी धर्म वाणी की रोशनी-2 मेरी आत्मा की है जिंदगी।
सत्संग की जो फुहार है, छायी है मेरा मन मगन॥
मेरा हर भजन-2

तेरा ध्यान है मुक्ति बहार-2, मानो धर्म को जो सार है।
मेरी अर्चना की राह में, तेरी वाणी के हैं नव गगन॥
मेरा हर भजन-2

तेरी ज्ञान की परछाइयाँ, है मुक्ति की शहनाइयाँ।
मेरी आत्मा की मुरली ये, निश दिन रहे तेरा स्तवन॥
मेरा हर भजन-2

तेरी नित्य में पूजा करुँ-2 आराधना में पद रचूँ।
मेरी आत्मा में रम रहा-तेरी शांत कलियों की पवन॥
मेरा हर भजन-2

जहाँ पर देवदर्शन हो, वही भवपार होता है।
जहाँ मुनियों की वाणी हो, वही उद्धार होता है॥
मुझे लगता नहीं णमोकार से ऊँचा यहाँ कोई।
वहाँ सब पाप कट जाते, जहाँ णमोकार होता है॥

110.

जिसको तू खोज रहा वन्दे, वह मालिक तेरे अन्दर है ।
बाहर के मन्दिर कृत्रिम है, सच्चा मंदिर तो अन्दर है॥
ले दीप धूप फल पुष्प चरुं, इसकी अर्चा तू करता है।
सचमुच जिसकी अर्चा करता, वह दिव्य देव तो अन्दर है॥

धोने को अपना पाप मैल क्यों तीर्थों बीच भटकता है।
जिसमें सब पाप मैल धुलता, वह विमल तीर्थ तो अन्दर है॥

ग्रन्थों-ग्रन्थों का वैभव तू, चिल्ला-चिल्ला कर गाता है।
जिसमें सब ग्रन्थ भेद होता,वह विमल पंथ तो अन्दर है॥

बाहर के झंझट छोड़-छोड़ चेतन अपने से अपने हो।
जिसको सब ऋषि मुनि भजते, वह चिदानन्द तो अंदर है॥

भटकना जिनकी आदत है, कभी वो घर नहीं पाते।
कि गूँगे गीत जिस तरहा कभी भी स्वर नहीं पाते॥
लिखा इतिहास में भगवान से बढ़कर गुरु होते।
गुरु निंदा जो करते हैं, कभी वो तर नहीं पाते॥

111.

झूठी दुनियाँ से मन को हटा ले।
ध्यान प्रभु चरणों में लगा ले॥
नसीबा तेरा जाग जायेगा, नसीबा तेरा जाग जायेगा।
झूठी.....।
झूठे संसार का चलन ये अनोखा है।
पग-पग मिले यहाँ, धोखा ही धोखा है॥
मान जाये तो इनको मना ले।
मन में ध्यान की ज्योति जला ले॥
नसीबा तेरा जाग जायेगा, नसीबा तेरा जाग जायेगा।
झूठी.....॥ 1॥
माल तेरे पास है तो माल तेरा खायेंगे।
हुआ जो खतम तो, नजर नहीं आयेंगे॥
इस राज को तू मन वसा ले।
ध्यान प्रभू चरणों में लगा ले॥
नसीबा तेरा जाग जायेगा, नसीबा तेरा जाग जायेगा।
झूठी.....॥ 2॥
सारा जमाना तेरे चरणों का दीवाना है।
मानते हैं सब सच्चा तेरा ही ठिकाना है॥
हाथ इनका तू सर पे धरा ले।
काम फिर चाहे जितना करा ले॥
नसीबा तेरा जाग जायेगा, नसीबा तेरा जाग जायेगा
झूठी.....॥ 3॥

112.

जिन्दगी सुधार बन्दे यही तेरो काम है।

मानुष देह पाई प्रभु से न प्रीत लाई।
विषयों के जाल माहीं फँसी या निकाम है॥

भाई बन्धु मित्र नारी, अंत में न सहायकारी।
काल यम पाशधारी सिर पर मुकाम है॥

अञ्जुली को नीर जैसो जावत शरीर तैसो।
धरे अब धीर कैसे बीतत तमाम है॥

गुरु की शरण जाओ, प्रभु का स्वरूप ध्यायो।
'ब्रह्मानंद' मोक्ष पाओ सब सुखधाम है॥

113.

हम तो कबहूँ न निजघर आये।
पर घर फिरत बहुत दिन बीते नाम अनेक धराये॥

पर पद निजपद मान मगन हवै पर परिणति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर चेतन भाव न भाये॥

नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, आतम गुण नहिं गाये॥

कबहूँ भूल भई हमरी फिर कहा काज पछताये।
'दौल' तजो अजहूं विषयन को सतगुरु वचन सुनाये॥

114.

भगवन्त भजन क्यों भूला रे।
यह संसार रैन का सपना तन धन वारि बबूलारे॥
इस जोबन का कौन भरोसा पावक में तृण पूला रे।
काल कुदाल लिये सिर ठाड़ा, क्या समझे मन फूला रे॥
स्वारथ साधै पाँच पांव तू परमारथ को लूला रे।
कछु कैसे सुख पावै प्राणी काम करे दुःख भूला रे॥
मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निजकर कंध वसूला रे।
भज श्री राजमतीवर 'भूधर', दो दुरमति सिर धूला रे॥

115.

साधना के रास्ते आत्मा के वास्ते, चल रे राही चल।
मुक्ति की मंजिल मिले शांति के सरसिज खिले,
चल रे राही चल।
ज्ञान ही अज्ञान था तो भटकते थे हर जनम।
छल कपट माया में पड़कर खो दिया ये नर जनम।
त्याग और कल्याण की हो शरण भगवान की॥
चल रे राही चल।
कौन है अपना यहाँ किसको पराया हम कहें।
एक ही आँखों में खुशियाँ एक के आँसू बहें॥
आत्म मंदिर में चले ज्योति से ज्योति जले।
चल रे राही चल।

116.

हम यही कामना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में बाहुबली, सारी धरती धर्मस्थल हो॥
हम यही कामना .....॥
हम भेद मतों के समझें पर, आपस में कोई मतभेद न हो।
ऐसे आचरण करें जिन पर कभी क्षोभ न हो कोई खेद न हो।
जो प्रेम प्रीति की शिक्षा दे, वही धर्म हमारा संबल हो॥
हम यही कामना .....॥
आराध्य वही हो जिन सबने, मानवता का संदेश दिया,
तुम जियो सभी को जीने दो, सबके हित यह उपदेश दिया।
उनके सिद्धान्तों को माने, और जीवन का पथ उज्ज्वल हो॥
हम यही कामना .....॥
चिंतामणी की चिंता न करें जीवन को चिन्तामणी जानें,
परिग्रह न अनावश्यक जोड़ें, क्या है आवश्यक पहचानें।
क्षणभंगुर सुख के हेतु कभी, नहीं चित्त हमारा चंचल हो॥
हम यही कामना .....॥
सब णमोकार का जाप करें और पाठ करें भक्तामर का,
नित नियमित पालें पंचशील,और त्याग करें आडम्बर का।
वो कर्म करें जिन कर्मों से, सारे संसार का मंगल हो॥
हम यही कामना .....॥

117.

पंखिड़ाऽऽ पंखिड़ा - 2 पंखिड़ा हो पंखिड़ा,
पंखिड़ा तू उड़ के जाना पावापुरि रे।
वीर प्रभु से कहना थारा भक्त आयो रे॥
पंखिड़ा.....॥
मेरे गाँव के माली बाबा, जल्दी आओ रे।
वीर प्रभु के खातिर थोड़ा पुष्प लाओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 1॥
मेरे गाँव के जौहरी भाई, जल्दी आओ रे।
वीर प्रभु के खातिर थोड़ा जेवर लाओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 2॥
मेरे गाँव के सेवक भाई, जल्दी आओ रे।
वीर प्रभु के पैर धुलावन, जल ले आओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 3॥
मेरे गाँव के जैनी भाई जल्दी आओ रे।
वीर प्रभू की पूजा खातिर द्रव्य लाओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 4॥
मेरे गाँव के मुखिया भाई जल्दी आओ रे।
वीर प्रभु की आरति करने थाल सजाओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 5॥
मेरे गाँव के मिठया भाई, जलदी आओ रे।
वीर प्रभु जी मोक्ष गये, लड्डू बनाओ रे॥
पंखिड़ा.....॥ 6॥

118.

(ऐ मेरे प्यारे वतन)

ओ मेरे गुरुवर परम, ओ मेरी अंतिम शरण, तेरा ही बस ध्यान।
तू ही मेरा मंदिर, तू ही मेरी पूजा, तू ही है भगवान॥

तेरी शरणा आये जो भी, होगा वो ही जग की शान।
रख दे जिसपे हाथ अपना वो ही बन जाये महान॥
जग से न्यारी कृपा तेरी, सबसे प्यारा तेरा नाम॥

माँ की ममता बन कभी, करुणा तो बहाता है तू।
बदरी सुख की बन कभी, मुझपे ही छा जाता है तू॥
उपकार तेरे लाख गुरुवर, करते आँसू ये प्रणाम॥

मन में है बस एक तमन्ना, तू ही मेरा हर कदम।
आऊँ जब जग में दुबारा, पाऊँ तेरा ही शरण॥
तू ही है सुबह मेरी, तू ही है जीवन की शाम॥

सकल तत्त्व के संस्तुत मानव, दुर्लभ तेरा आगम-ज्ञान।
अज्ञ-जनों को सम्बल देता, चिन्तामणि सम सम्यग्ज्ञान॥
आप रहे शास्त्रज्ञ विचक्षण, अयश भाव का अन्त किया।
नष्ट हुए हैं अपयश सारे, जग को मुक्ति पन्थ दिया॥

119.

(तर्ज - हाल क्या है दिलों का..)

चारों गतियों में दुखड़े, बहुत ही सहे।
इनको कर ले प्रणाम, आखिरी-आखिरी॥
सिद्ध बसते जहाँ, चल के पंचम गति।
पै तू करले मुकाम, आखिरी-आखिरी॥
चारों.....।
तेरी मिथ्या मति ने, अंधेरा किया।
जिससे चारों ही गति में, वसेरा किया॥
दर्शन मोहनी और मिथ्या की, हस्ती मिटा।
पीले सम्यक्त्व का जाम, आखिरी-आखिरी॥
चारों.....॥ 1॥
उपशम सम्यक्त्व ने आकर के, धोखा दिया।
क्षायोपशम ने, श्रेणी न चढ़ने दिया॥
करके पुरुषार्थ कर प्राप्त क्षायिक को तू।
तेरा ये ही है काम, आखिरी-आखिरी॥
चारों.....॥ 2॥
क्षायिक सम्यक्त्व और क्षायिक का, चारित्र जगा।
ज्ञान केवल के क्षायिक का सूरज उगा॥
ज्ञान के भान से घातिया कर्म का।
होता किस्सा तमाम, आखिरी-आखिरी॥
चारों.....॥ 3॥
गुणस्थान आदिक जब, चौदह चढ़े।
तो अघातिकर्म का, पता न लगे॥
वेदनी गोत्र आयु का, भी अंत हो।
नाम के नाम को, आखिरी-आखिरी॥
चारों.....॥ 4॥

120.

ओ पालन हारे, गुण अनंत न्यारे, तुमरे बिन हमरा, कौन यहाँऽऽ
मेरी उलझनऽऽ,सुलझाओ भगवन, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....।
हम गरीबों का, कोई न सहारा, तुम्हें अपना, समझ के पुकारा
जगसे जो हारा, तुमने ही तारा, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 1॥
सिवा तेरे न, दूजा हमारा, तू ही देता है, आके सहाराऽऽ
जो विपदा आवे, पल में मिट जावे, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 2॥
तुझे भक्तों ने, जैसे पुकारा, तू ही हरता है, कष्ट हमाराऽऽ
जो कुछ हम माँगें, पल में मिल जावे, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 3॥
तुमने भक्तों के, दुःख को टाला, हर मुसीबत से उनको निकाला
भक्तों के प्यारे, आँखों के तारे, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 4॥
प्रभुं याद जब, तेरी आवे, आँखें मेरी फिर, भर-भर जावें
अब तो सुन लो तुम, पास बुलालो तुम, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 5॥
सेठ सुदर्शन को, तुमने ही तारा, श्रीपाल का कुष्ठ निवाराऽऽ
दर पे जो आवे, खाली न जावे, तुमरे बिन हमरा कौन यहाँ-2
ओ पालन.....॥ 6॥

121.

कंकड़ पत्थर गले लगाये, हीरा को ठुकराये।
तुम्हें क्या हो गया है, तुम्हें क्या हो गया है॥
पुद्गल से तू रास रचाये, आतम को विसराये - तुम्हें...
कंकड़ .....।
कुछ तो समझले प्राणी, जाना कहाँ है, कहाँ जा रहाऽऽ
तरसें जिसे देवता, विषयों में तन तू गवाँ रहाऽऽ
पारस मणि को हाथ में लेकर, उससे काग उड़ाये - तुम्हें...
कंकड़ .....॥ 1॥
जिस दिन खुलेगा पिंजरा, पंख पखेरु उड़ जायेगाऽऽ
मुट्ठी को बांध आया, हाथ पसारे तू जायेगाऽऽ
सोना चाँदी महल अटारी, कुछ भी साथ न जाये - तुम्हें...
कंकड़ .....॥ 2॥
मकड़ी सरीखा बन बुनता तू रहता अरे जालियाऽऽ
लेकिन खबर नहीं है, चलने की कब हो तैयारियाँऽऽ
मौत तेरे घर न जाने कब, डोली लेकर आये - तुम्हें...
कंकड़ .....॥ 3॥
मानव अभी भी समय है, अंतर की अखियाँ खोल लेऽऽ
विषयों के रस को छोड़ो अंतर में आतम रस घोल लेऽऽ
यह मानव पर्याय है दुर्लभ, हाथ तेरे न आये - तुम्हें...
कंकड़ .....॥ 4॥

122.

गुरुदेव की कृपा से, सब काम हो रहा है।
करते हो आप भगवन, मेरा नाम हो रहा है॥
गुरुदेव की कृपा से.....॥ टेक॥
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है।
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है॥
गुरुदेव की कृपा से.....॥ 1॥
मैं तो न ही हूँ काबिल, तेरे पास कैसे आऊँ।
टूटी हुई वीणा से, गुणगान कैसे गाऊँ॥
तेरी दया से ये गुल, गुलजार हो रहा है॥
गुरुदेव की कृपा से.....॥ 2॥
तुम हो परम दयालु, जो दे दिया सहारा।
मझधार डूबी नैया, को मिल गया किनारा॥
दी कामयाबी मुझको, दुश्मन भी रो रहा है॥
गुरुदेव की कृपा से.....॥ 3॥
तेरी ही भक्ति मुझको, हिम्मत बँधा रही है।
मुश्किलों के सम्मुख, साहस जगा रही है॥
काम था जो मुश्किल, आसान हो रहा है॥
गुरुदेव की कृपा से.....॥ 4॥

123.

(तर्ज - गाड़ी बुला रही है)

टिक टिक सुना रही है, जीना सिखा रही है।
अनमोल पाठ हमको, घड़ियाँ पढ़ा रही हैं॥
टिक.....॥ टेक॥
आया प्रभात, समझें न रात, पंछी तजे बसेरा।
करवट न फेर कर अब न देर, छुपने लगा अंधेरा॥
घण्टी बजा रही है, हमको जगा रही है।
अनमोल पाठ हमको, घड़िंया पढ़ा रहीं हैं॥
टिक.....॥ 1॥
गम हैं हजार लेकिन बहार, इक दिन तुझें मिलेगी।
हिम्मत न हार, चल बारबार, मंजिल तुझे मिलेगी॥
ढांढस बंधा रही है, साहस जगा रही है।
अनमोल पाठ हमको, घड़िंया पढ़ा रहीं हैं॥
टिक.....॥ 2॥
करना मुकाम बिल्कुल हराम, ये वक्त का कथन है।
देना न साथ, आता न हाथ, ये वक्त का चलन है॥
सबको बता रही है, हर पल जता रही है।
अनमोल पाठ हमको, घड़िंया पढ़ा रहीं हैं॥
टिक.....॥ 3॥

124.

कितना सुंदर तेरा द्वारा, यहीं गुजारुँ जीवन सारा
तेरे दरश की लगन से, हमें आना पड़ेगा इस दर पे दुबारा
कितना.....।
मेरी बिगड़ी जल्द बनाओ, मुझको भव से पार लगाओ
अंजन को जब तारा - हमें ...
मेरे तुम हो एक सहारे, तुम ही हो बस हमको प्यारे
रूप तुम्हारा प्यारा - हमें...
तुमसे अब मैं कुछ नहिं चाहूँ, जन्म-जन्म तक दर्शन पाऊँ
पाने जगत किनारा -हमें...
वीतरागमय रूप तुम्हारा, सब देवों में तू है न्यारा
तुझमें ज्ञान अपारा - हमें...
जग की पीड़ा हरने वाले, भव का शोषण करने वाले
शिवसुख के करतारा - हमें...
अष्ट द्रव्य को लेकर आऊँ, तेरे गुण में प्रतिदिन गाऊँ
उर ने तुम्हें पुकारा - हमें...
दीन दुःखी के दुःख मिटाते, भव्यजनों को राह दिखाते
सुंदर तेरी धारा - हमें...
गुणीजनों ने तुमको ध्याया, उर में पाकर ज्ञान बढ़ाया
तेरा हमें सहारा - हमें...
रात रात भर नींद न आती, सपनों में पूजा हो जाती
ऐसा तेरा नजारा - हमें...
महिमा अपरंपार तुम्हारी, महावीर तुम संकटहारी
देना जगत किनारा - हमें...

125.

पलकें ही पलकें बिछायेंगे - 2
जिस दिन गुरुवर प्यारे, घर आयेंगे,
हम तो हैं, गुरुवर के, जन्मों से दीवाने रे॥
मीठे-मीठे भजन सुनायेंगे - जिस....
पलकें .....॥ टेक॥
घर का कौना-कौना मैंने फूलों से सजाया,
वंदनबार बंधाई, घी का दीप जलाया॥
होऽऽ प्रेमीजनों को बुलायेंगे - जिस.....
पलकें.....॥ 1॥
अब तो ऐसी लगन लगी, तू प्रेम सुधा बरसादे,
जनम-जनम की मैली चादर, अपने रंग रंगा दे॥
होऽऽ जीवन धन्य बनायेंगे - जिस.....
पलकें.....॥ 2॥
नीम की ठण्डी छाँव में, गुरुवर मेरे बैठे,
जीना सबका हक है, ये गुरुवर मेरे कहते॥
जय गुरुवर, जय गुरुवर, गायेंगे - जिस....
पलकें.....॥ 3॥
गुरुवर की अमृतमय वाणी, सबके मन को भावे,
स्वर्ग उतर आया धरती पर, मानो ऐसा लागे॥
झूम-झूम, नाचें गायेंगे - जिस.....
पलकें.....॥ 4॥

126.

मेरे सपनों में महावीर आने लगे।
राहे मुक्ति कहानी बताने लगे॥
मेरे.....॥ टेक॥
मैंने पूछा तुम्हारा ठिकाना कहाँ-2
वो सिद्धों का धाम, बताने लगे॥
मेरे.....॥ 1॥
मैंने पूछा कि जन्म कहाँ पर लिया-2
वो तो कुण्डलपुरी जी बताने लगे॥
मेरे.....॥ 2॥
मैंने पूछा कि मोक्ष कहाँ से लिया-2
वो तो पावापुरि जी, बताने लगे॥
मेरे.....॥ 3॥
मैंने पूछा कि संसार कैसे तिरुं-2
मोक्ष का मार्ग मुझको, बताने लगे॥
मेरे.....॥ 4॥
मैंने पूछा कि प्रगटे वो टीला कहाँ-2
वो तो चाँदनपुरी जी, बताने लगे॥
मेरे.....॥ 5॥
मैंने पूछा कि सपनों आये हो क्यों-2
तुम भक्त हो प्यारे, बताने लगे॥
मेरे.....॥ 6॥

127.

मेरे सर पे रख दो बाबा, अपने ये दोनों हाथ।
देना है तो दीजिये, जनम-जनम का साथ॥
मेरे सर पे.....॥ टेक॥
सुना है हमने शरणागत को अपने गले लगाते हो।
ऐसा हमने क्या मांगा जो, देने से घबराते हो॥
न हीरे न मोती - 2, बस रखिये मेरी बात - देना..
मेरे सर पे.....॥ 1॥
बिन पाये बाबा मैं कैसे, अपने घर को जाऊँगा।
खाली हाथ गया तो बाबा, चेहरा किसे दिखाऊँगा॥
अब तो लाज हमारी - 2, बाबा है तेरे ही हाथ - देना..
मेरे सर पे.....॥ 2॥
पापी से पापी तारे हैं, अबकी नंबर मेरा है।
जग से पार उतर जाऊँगा, मिला सहारा तेरा है॥
न गाड़ी न घोड़ा - 2, बस चाहिये तेरा साथ - देना..
मेरे सर पे.....॥ 3॥
प्रभुवर तेरे चरण हैं पकड़े, इन्हें कभी न छोडूँगा।
कर्म अभागे दम तोड़ें या, मैं अपना दम तोडूँगा॥
देखें किसको मिलता है, अब तेरा आशीर्वाद-देना..
मेरे सर पे.....॥ 4॥

128.

मन में तुम्हें बसा के, भावों की द्रव्य चढ़ा के,
पूजा करूँगा तेरी, वंदना करूँगा तेरी।
हर पल हर दिन तुम हृदय में और नहीं है कोई,
क्षण क्षण सोचूँ बात यही मैं किस विधि मिलना होई
चरणों में सिर झुकाये, भावों की द्रव्य चढ़ाके॥
पूजा करूँगा तेरी.....॥
मन ही मन देखूँ गुरु मैं मन मंदिर में अपने,
अंतरयामी पूरे करना तुम ही मेरे सपने।
श्रद्धा का दिया जला के भावों की द्रव्य चढ़ाके॥
पूजा करूँगा तेरी.....॥
तुमको ध्याकर मन में गुरुवर रात को मैं सो जाऊँ,
भोर भये जब आँख खुले तो तेरे ही दर्शन पाऊँ।
भक्ति में मन लगाके भावों का दिया जलाके॥
पूजा करूँगा तेरी.....॥

जिन्दगी की डायरी में यह बात लिख लीजिए।
कि सफर लम्बा है मुकाम मत कीजिए॥

रास्तों के राहगीरों से रिस्ते हम बनाते नहीं।
मालूम है साथ चलते वो मगर बदलते नहीं॥

रास्ता मिला है तो सफर मंजिल की करो।
रास्ते में पड़े रहना कचड़े की निशानी है॥

129.

श्री आदिनाथ भगवान, बड़े बाबा मेरे।
कुंडलपुर की पहचान, बड़े बाबा मेरे॥
श्री आदिनाथ.....॥
कुंडलाकार ये पर्वत प्यारा, जहाँ सुशोभित मंदिर न्यारा।
ये तो जैनधर्म की शान, बड़े बाबा मेरे॥
श्री आदिनाथ.....॥
छत्रसाल ने पुण्य कमाया, मंदिर जीर्णोद्धार कराया।
किया खुले हृदय से दान बड़े बाबा मेरे॥
श्री आदिनाथ.....॥
पन्द्रह फुट की प्रतिमा साजे, पद्मासन प्रभु स्वयं विराजे।
प्रतिमा में प्रतिष्ठित प्राण, बड़े बाबा मेरे॥
श्री आदिनाथ.....॥
सुन्दर कीर्ति स्वयं भट्टारक, दे गये हमको ये स्मारक।
चौमासे का ये अनुदान बड़े बाबा मेरे॥
श्री आदिनाथ.....॥

गगन की इन दिशाओं को मजे से ओड़ लेते हो।
सुबह से शाम से नाता तुम अपना जोड़ लेते हो॥
सुबह में फूल से महको, निशा में चाँद से चमको।
अनादिकाल की कर्मों की कड़िया तोड़ लेते हो॥

130.

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ॥
मैली चादर.....॥

तुमने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया।
आकर के संसार में मैंने, इसको दाग लगाया।
जनम-जनम की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ॥
मैली चादर.....॥

निर्मल वाणी पाकर तुमसे, नाम न तेरा गाया।
नैन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी न तुझको ध्याया।
मन वीणा की तारें टूटीं, अब क्या गीत सुनाऊँ॥
मैली चादर.....॥

नेक कमाई करी ना कोई, जग की माया जोड़ी।
जोड़ के नाते इस दुनियाँ से, तुम संग प्रीती तोड़ी
कर्म गठरिया सिर पर राखे, पग भी चल न पाऊँ॥
मैली चादर.....॥

इन पैरों से चलकर तेरे, मंदिर कभी न आया।
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया।
हे भगवन्, मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ।
मैली चादर.....॥

मिट जाते हैं औरों को मिटाने वाले।
अरे लाश कब रोती है, रोते हैं जलाने वाले॥

131.

कुदरत ने शिखर जी को-2 क्या खूब संवारा है॥
मधुवन में पर्वत का प्यारा सा नजारा है॥
ऊँचा पर्वत करता, आकाश से बातें।
नित पर्वत पर होती भक्ति की बरसातें।
इस बारिश में भीगे सौभाग्य हमारा है॥
कुदरत ने शिखर .....॥

इक छोर पे है चंदा इक पर पारस बाबा-2।
जैनों की यही काशी जैनों का यही काबा॥
करें देव भी नित वंदन, स्वर्गों से भी प्यारा है॥
कुदरत ने शिखर .....॥

दीवाने भक्तों की लगे भीड़ बड़ी भारी-2।
डोली वाले चढ़ते-चढ़ते है नर नारी॥
जय जय पारस बाबा बस एक ही नारा है॥
कुदरत ने शिखर .....॥

हर टोंक पे हैं शोभित जिनवर के चरण प्यारे।
जल मंदिर है सुन्दर, नाले हैं दो न्यारे॥
इन नालों का जल तो अमृत से भी प्यारा है॥
कुदरत ने शिखर .....॥

दिन रात लगा रहता, मधुवन में भी मेला।
मंदिर है बड़े प्यारे मौसम है अलबेला॥
पर्वत की छटाओं ने, मधुवन को निखारा है॥
कुदरत ने शिखर .....॥

132.

मुझे चरणों में बसाले, सांवलिया शिखरों वाले।
मेरे जीवन की है नैया, प्रभु पार्श्व तेरे हवाले॥
जग का सताया हूँ मैं, जग का रुलाया हूँ मैं,
तेरी शरण में प्रभु जी, सब छोड़ आया हूँ मैं।
तेरे बिन और नहीं जो, प्रभु जग से मुझे निकाले॥
मुझे चरणों .....॥
मैं तो अधम हूँ भारी, मुझमें है कमियाँ सारी,
फिर भी मैं चाहूँ बाबा, मुझ पे कृपा तुम्हारी।
दीनों के संग दाता का, प्रभुरिता आज निभाले॥
मुझे चरणों .....॥
मैं तो जनम का प्यासा, बन जाओ प्रभु जी सावन
लाखों को कीना तुमने, मुझको भी कर दो पावन।
मुझे तुम जैसा या तेरा, प्रभु दास अपना बना ले॥
मुझे चरणों .....॥
तेरी कृपा के प्रभु जी, मैं तो नहीं हूँ काबिल,
फिर भी दया मिलेगी, कहता है ये मेरा दिल।
तूने जग पे कृपा दिखाई, कुछ मुझ पर कृपा दिखाले॥
मुझे चरणों .....॥

जो तुमसे झुककर मिला होगा।
निश्चय ही वह तुमसे, बड़ा आदमी होगा॥

133.

हे मुनिवर धन्य हो तुम, कितना परिषह सहते हो,
सर्दी गर्मी या हो बरसात, तुम अपने में रहते हो।
समता रस को पीते हो, जग से कुछ नहीं कहते हो॥
हे मुनिवर धन्य हो तुम.....॥
महा ऋषि आचार्य श्री ने कैसा संघ रचाया,
निर्देशन पाने चरित्र खुद मुनि के द्वारे आया।
संयम ही जीवन है, प्रवचन में ये कहते हो॥
हे मुनिवर धन्य हो तुम.....॥
आदिनाथ की कृपा देखो महावीर की छाया,
पारस रूपी विद्या पाकर कुन्दन होती काया।
भक्तों को हे गुरुवर, छोटे बाबा लगते हो॥
हे मुनिवर धन्य हो तुम.....॥
गंगा और नर्मदा जैसी लगे आर्यिका माता,
एक दृष्टि में मैल जनम का पल भर में धुल जाता।
ज्ञान नदी बनकर के सारे विश्व में बहते हो॥
हे मुनिवर धन्य हो तुम.....॥
यश की ऐसी किरणें फैलीं जय जयकार हुआ,
गुरुवर के आकर्षण से मोहित संसार हुआ।
प्रभु जैसा बने हम सब जीवों से ये कहते हो॥
हे मुनिवर धन्य हो तुम.....॥

134.

जीवन के किसी भी पल में वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है॥
ऐसे ही संत शिरोमणि गुरुवर श्री विद्यासागर,
इस काल में जो करते हैं उस काल के तथ्य उजागर।
निर्ग्रंथ साधु ही सारे सद्गुण से सज सकता है॥
संसार में रहकर प्राणी.....॥
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कोई मृतक देख वैरागी,
बिन कारण दीक्षा लेता, कोई पूर्व जनम का त्यागी।
जन्मों का संस्कारी ही, प्रभु जन्म से भज सकता है॥
संसार में रहकर प्राणी.....॥
आगम का कर पारायण, आगम के निगम बने हैं,
जिनके श्रीमुख से आगम हमें इतने सुगम बने हैं।
मन मर्म धर्म का गुरु के, द्वारा ही समझ सकता है॥
संसार में रहकर प्राणी.....॥

आराध्य तुम्हीं हम श्रमणों के हो, खुद को मैं संबोध रहा।
संयम-वैभव गुरु समधारो, जिसमें आतम-शोध रहा॥
अबुध जनों का मत धर संयम, वह तेरा अपकारक है।
अतः तजो तुम विभव-असंयम, संयम ही अघ-हारक है॥

135.

जाएगा जब जहाँ से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफन का कपड़ा, तेरा लिवास होगा॥
तूने उमर बिताई, माया से प्रीत करके,
तूने कर्म कीने खोटे, आतम किनारे धरके।
तुझे अपनी गलतियों का, एक दिन एहसास होगा॥
दो गज कफन .....॥
तुझको लगे जो प्यारे, सुख ये जो जग के सारे,
ये ही तो एक रोड़ा, उद्धार में तुम्हारे।
पल पल यूँ ही बिताकर, खुद से निराश होगा॥
दो गज कफन .....॥
तूने जग के रिश्ते नाते, माने सदा ही अपने,
तूने धर्म को भुलाया, सत कर्म हुए सपने।
जब कर्म फल मिलेगा, तन्हा उदास होगा।
दो गज कफन .....॥
नव देवों की तू मन से, आराधना ही करले,
करले गुरु की सेवा, जिनवाणी उर में धरले।
होगा मरण समाधि, शिवपुर में वास होगा॥
दो गज कफन .....॥

दुश्मनी जमकर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे।
जब कभी हम दोस्त बन जायें तो शर्मिंदा न होना पड़े॥

136.

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुझे रिझाएँ।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये॥
जब से जनम लिया है विषयों ने हमको घेरा,
छल और कपट ने डाला इस भोले मन पे डेरा।
सदबुद्धि को अहं ने, हर दम रखा दबाये॥
इस योग्य हम .....॥
निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं,
तेरा ध्यान जब लगायें, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो ना पाये॥
इस योग्य हम .....॥
जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है,
इक दूसरे के सुख में, खुद को बड़ी जलन है।
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ ना पाये॥
इस योग्य हम .....॥
जब कुछ ना कर सके तो, तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजाऐं।
अब ज्ञान हमको दे दे, कुछ और हम ना चाहें॥
इस योग्य हम .....॥

लक्ष्य न ओझल होने पाए, कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी, आज नहीं तो कल॥

137.

कंकर कंकर बन गया मोती, पत्थर-पत्थर धन्य हुआ,
अरिहंतों के चरण चूमकर, जड़ पर्वत चैतन्य हुआ।
केवलियों की जिनवाणी से, मुखरित गहन अरण्य हुआ,
अरिहंतों के चरण.....॥
चौबीसों में बीस जिनेश्वर, मुक्त हुए यहाँ ध्यान लगाकर,
जन को जिनपद देने वाला, चमत्कार देखा है यहीं पर।
इतने जिनवर मुनिवर वाला, गिरिवर नहीं कोई अन्य हुआ॥
अरिहंतों के चरण.....॥
गिरि का वातावरण अलौकिक, दिव्य छटा मनहरण अलौकिक,
कूट कूट में जिनदेवों के, मंगलकारक चरण अलौकिक।
प्राप्त अगोचर दुर्लभ सिद्ध आत्माओं का सौजन्य हुआ॥
अरिहंतों के चरण.....॥
पार्श्वनाथ महाराज का शासन, सिद्ध शिला पर जिनका आसन,
अपने जैसा पद देने का, देते भक्तों को आश्वासन।
धर्म मोक्ष इस कारण, इस दाता का भक्त अनन्य हुआ॥
अरिहंतों के चरण.....॥

नफरत से नफरत मिले, मिले प्यार से प्यार।
जैसा बीज तुम बोओगे, वैसा फल तैयार॥

दुनिया में बहुत कमाया, क्या हीरा क्या मोती।
मगर क्या करें यारो, कफन में जेब नहीं होती॥

138.

नाचे जो मन को मोर रे, नाचे जो मन को मोर रे।
कुंडलपुर मे बजरई, बधईया नाचे जो मन को मोर रे॥
पर्वत ऊपर बाबा विराजे, मंदिर बना विशाल रे।
पन्द्रह फुट की ऊँची प्रतिमा लगती है चित चोर रे॥
नाचे जो मन .....॥
कुंडलपुर के बड़े बाबा की महिमा अपरम्पार रे।
छोटे बाबा के आने से छाई खुशियाँ अपरम्पार रे॥
नाचे जो मन .....॥
बड़े बाबा और छोटे बाबा का अजब लगा दरबार रे।
मुनि आर्यिका का संघ देख हुआ मन मोर रे॥
नाचे जो मन .....॥
महामस्तक अभिषेक करने जुड़ी है भीड़ अपार रे।
पंचकल्याणक के अवसर पर भक्ति कर कर जोड़ रे।
नाचे जो मन .....॥

हैं अजब ये जिंदगी के रास्ते।
कौन ठहरा है किसी के वास्ते॥

जैसा दर्द हो वैसा मंजर होता है।
मौसम तो इन्सान के अंदर होगा॥

139.

गहरी-गहरी नदिया नाव बिच धारा है।
तेरा ही सहारा भगवन् तेरा ही सहारा है॥
डगमग करती है कर्मों के भार से।
मारग भूल रहें हैं घोर अंधकार से॥
डूबती सी नाव का तू ही खेवनहारा है॥
तेरा ही सहारा .....॥
अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से।
कुष्ठ रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से॥
भव दुःख का तू ही मेटनहारा है॥
तेरा ही सहारा .....॥
वीतराग छवि तेरी लगे अति प्यारी है।
चरणों में जाऊँ नाथ बलि बलिहारी है॥
रूप तेरा देखकर शांति चित्तधारा है॥
तेरा ही सहारा .....॥

खुद जिन्हें यकीं नहीं होता अपनी मंजिलों का।
मील का पत्थर उन्हें क्या रास्ता दिखायेगा॥

तुम तो माफी दे दोगे हर बार गुनाहों की।
मगर हर बार गुनाह करना हमें गँवारा नहीं॥

140.

दुनियाँ में गुरु हजारों हैं, विद्यासागर का क्या कहना।
इनकी भक्ति का क्या कहना, इनकी शक्ति का क्या कहना॥
दुनियाँ में गुरु.....॥
जब ज्ञानसागर गुरुवर से मिले, दीक्षा की आशा ले के चले।
माता को भुलाना क्या कहना, घर वार भुलाना क्या कहना॥
दुनियाँ में गुरु.....॥
यों घर की देहरी लांघ गये और ज्ञान की गंगा में डूब गये।
तेरा मोह न करना क्या कहना, कर्मों को जलाना क्या कहना॥
दुनियाँ में गुरु.....॥
इनके मन मंदिर में तो सदा ज्ञानसागर की ज्योति जलती है।
ये गुरु दीवाने क्या कहना, जग इनका दीवाना क्या कहना॥
दुनियाँ में गुरु.....॥

141.

सब मिल के आज जय कहो श्री वीर प्रभु की।
मस्तक झुका कर जय कहो श्री वीर प्रभु की॥
विघ्नों का नाश होता है, लेने के नाम से।
माला सदा जपते रहो श्री वीर प्रभु की॥
ज्ञानी बनो, दानी बनो, बलवान भी बनो।
अकलंक सम बनकर कहो जय वीर प्रभु की॥
होकर स्वतंत्र धर्म की रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो और जय कहो श्री वीर प्रभु की॥
तुमको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है दास।
जिनवाणी पर श्रद्धा करो श्री वीर प्रभु की॥

142.

कुछ पल की जिंदगानी एक रोज सबको जाना।
वर्षों की तू क्यों सोचे पल का नहीं ठिकाना॥
मलमल के तूने अपने तन को है जो निखारा,
इत्रों की खुशबुओं से महके शरीर सारा,
काया न साथ होगी ये बात न भुलाना॥
वर्षों की तू क्यों.....॥
मन है प्रभू का दर्पण, मन में इसे बसा ले,
करके तू कर्म अच्छे कुछ पुण्य धन कमाले।
कर दान और धर्म तू यही साथ ले के जाना॥
वर्षों की तू क्यों.....॥
आयेगी वो घड़ी जब कोई न साथ देगा,
कर्मों का तेरे सारे इक-इक हिसाब होगा,
ये सोच ले अरे तू ये वक्त फिर न आना॥
वर्षों की तू क्यों.....॥
कोई नहीं है तेरा क्यों करता है मेरा मेरा,
खुल जाये नींद जब भी समझो तभी सबेरा,
कर भोर की किरण संग प्रभु का भजन तू गाना॥
वर्षों की तू क्यों.....॥

सौ यत्न कम हैं जिंदगी बनाने को।
एक भूल काफी है जिंदगी मिटाने को॥

143.

अरिहंत देव स्वामी, शरण तेरी आये-2
दुख से हैं व्याकुल, कर्म के सताये-2
अरिहंत देव स्वामी .....॥
निज कर्म काट करके,आप सिद्ध हो गये हो।
तारण तरण तुम्हीं हो, जिनवाणी बताये-2
अरिहंत देव स्वामी .....॥
शक्ति है तुझमें ऐसी, करम काटने की।
छोड़कर तुम्हें हम, किसकी शरण जायें-2
अरिहंत देव स्वामी .....॥
मझधार में पड़ी है, प्रभुजी नाव मेरी।
भव पार तुम लगा दो, आश लेके आये-2
अरिहंत देव स्वामी .....॥
तारा है तुमने उनको, जिसने भी पुकारा।
हम भी पुकारते हैं, तुमसे लों लगाये-2
अरिहंत देव स्वामी .....॥

उम्मीद वक्त का, सबसे बड़ा सहारा है।
अगर हौसला हो, हर मौज में किनारा है॥

चेहरे के ये धब्बे हैं, जरा गौर से देखिए।
आइना ही क्यों साफ किए जा रहे हैं॥

144.

ओ जगत के शांति दाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी-2 ॥
ओ जगत के शांति.....॥
किसको में अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं[2]
इस जहाँ में, आप बिन कोई भी मन भाता नहीं॥
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता॥
शांति जिनेश्वर जय .....॥
तेरी ज्योति से जहाँ में, ज्ञान का दीपक जला।
तेरी अमृत बाण से ही राह मुक्ति का मिला॥
शीश चरणों में झुकाता॥
शांति जिनेश्वर जय .....॥
मोह माया में फँसा, तुमको भी पहचाना नहीं।
ज्ञान है ना, ध्यान दिल में, धर्म को जाना नहीं॥
दो सहारा मुक्ति दाता॥
शांति जिनेश्वर जय .....॥
बनके सेवक हम खड़े हैं, स्वामी तेरे द्वार पे।
हो कृपा, जिनवर तो, बेड़ा पार हो संसार से॥
तेरे गुण स्वामी में गाता॥
शांति जिनेश्वर जय .....॥

145.

कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे ना रे भाई।
जरा समझो इसकी सच्चाई रे॥
करम का लेख.....॥
इस दुनियाँ में भाग्य के आगे, चले ना किसी का उपाय,
कागज हो तो सब कोई वांचे, करम ना वांचा जाए।
इक दिन इसी किस्मत के कारण वन को गये थे रघुराई॥
करम का लेख.....॥
काहे मनवा धीरज खोता, काहे तू नाहक रोय,
अपना सोचा कभी नहीं होता, भाग्य करे सो होय।
चाहे हो राजा, चाहे भिखारी, ठोकर सभी ने यहाँ खाई रे॥
करम का लेख.....॥

146.

मुखड़ा देख ले प्राणी, जरा दर्पण में।
देख ले कितना पुण्य है, कितना पाप तेरे जीवन में॥
देख ले दर्पण .....॥
कभी तो पल भर सोच ले प्राणी, क्या है तेरी, कर्म कहानी ।
पता लगा ले, पड़े हैं कितने, दाग तेरे दामन में॥
देख ले दर्पण .....॥
खुद को धोखा दे मत वंदे, अच्छे ना होते कपट के धंधे-2 ।
सदा ना चलता किसी का नाटक, दुनियाँ के आँगन में॥
देख ले दर्पण .....॥

147.

पिंजरे के पंछी रे, तेरा दर्द ना जाने कोय[2]।
बाहर से तो खामोश रहे तू, भीतर-[2] रोए रे[2]॥
तेरा दर्द ना जाने.....॥
कह ना सके तू अपनी कहानी,
तेरी भी पंछी क्या जिदगानी रे[2]।
विधि ने तेरी कथा लिखी, आँसू में कलम डुबोए॥
तेरा दर्द ना जाने.....॥
चुपके-चुपके रोने वाले,
रखना छिपा के दिल के छाले रे[2]।
ये पत्थर का देश है पगले, कोई ना तेरा होए॥
तेरा दर्द ना जाने.....॥

148.

हमने जग की अजब तस्वीर देखी, इक हँसता है दस रोते हैं।
ये प्रभु की अद्भुत[2] जागीर देखी, इक हँसता है दस रोते हैं॥
हमें हँसते मुखड़े चार मिले, दुखियारे चेहरे हजार मिले।
यहाँ सुख से सौ गुनी पीर देखी, इक हँसता है दस रोते हैं॥
दो एक सुखी यहाँ लाखों में, आँसू हैं करोड़ों आँखों में।
हमने गिन-गिन हर तकदीर देखी, इक हँसता है दस रोते हैं॥
कुछ बोल प्रभु ये क्या माया-2, तेरा खेल समझ में ना आया।
हमने देखे महल रे कुटीर देखी, इक हँसता है दस रोते हैं॥

149.

क्या तन मांजना रे इक दिन मिट्टी में मिल जाना।
मिट्टी में मिल जाना रे बंदे, खाक में खप जाना॥
क्या तन मांजना.....॥
मिट्टी चुन-चुन महल बनाया वंदा कहे घर मेरा।[2]
इक दिन वंदा उठ चलेगा ये घर तेरा न मेरा॥
क्या तन मांजना.....॥
मिट्टी ओढ़न, मिट्टी बिछावन, मिट्टी का रे सिरहाना।[2]
इस मिट्टिया का एक बुत्त बनाया अमर जान लो भाना॥
क्या तन मांजना.....॥
मिट्टी कहे कुम्हार को रे तू क्या जाने मोय।[2]
इक दिन ऐसा आयेगा वंदे मैं रुंदूँगी तोय॥
क्या तन मांजना.....॥
मिट्टी कहे सुथार से रे तू क्या जाने मोय।[2]
इक दिन ऐसा आयेगा वंदे मैं खूंचूँगी तोय॥
क्या तन मांजना.....॥
दान-शियण-तप-भावना रे, शिवपुर मारग चार।
आनंदधन भाई चेत ले प्यारे, आखिर जाना गंवार॥
क्या तन मांजना.....॥

मानव की पूजा कौन करे, मानवता पूजी जाती है।
साधक की पूजा कौन करे, साधकता पूजी जाती है॥

150.

तू परम रस पायेगा पारस भज ले।
पारस भज ले, सांवरिया भज ले,
सच्चा सोना बन जायेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥
अश्वसेन के लाल ने रक्खा, अश्व बाँधकर मन का,
वामा देवी का जाया है, वैरागी बचपन का।
सुन प्यारे, जोगी तुझे भी बनायेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥
नेमिनाथ और महावीर के, बीचों बीच विराजे,
अहिक्षेत्र का केवली, सम्मेदशिखर पर साजे।
सुन प्यारे, वहाँ तुझे भी बुलायेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥
अग्निकुण्ड से नाग और नागिन, जलते हुए बचाये,
पद्मावती धरणेन्द्र हुए, उपसर्ग में वे काम आये।
प्रभु तुझे भी बचायेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥
'पा' छूटे रस रह जाये, 'र' छूटे आये पास,
'स' छूटे तो पार लगाये, पारस का विश्वास।
अक्षर-अक्षर काम आयेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥
श्रावण शुक्ला सप्तमी को, मोक्ष हुआ सुखदाई,
श्याम वर्ण को, श्याम घटाओं, ने दी सरस विदाई।
मोक्ष तुझे भी दिलायेगा, पारस भज ले॥
तू परम रस पायेगा.....॥

151.

जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को, मिल जाए तरुवर की छाया।
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है, मैं जब से शरण तेरी आया मेरे वीर॥

भटका हुआ मेरा मन था कोई, मिल ना रहा था सहारा,
लहरों से लड़ती हुई नाव को जैसे-², मिल ना रहा हो किनारा²।
उस लड़खड़ाती हुई नाव को जो किसी ने किनारा दिखाया॥
ऐसा ही सुख .....॥
शीतल बनें आग चंदन के जैसी, बाबा कृपा हो जो तेरी²,
उजियाले पूनम की हो जाए रातें, जो थी अमावस अंधेरी²।
युग युग से प्यासी मरुभूमि ने जैसे, सावन का संदेश पाया॥
ऐसा ही सुख .....॥
जिस राह की मंजिल, तेरा मिलन हो, उस पर कदम मैं बढ़ाऊँ²,
फूलों में खारों में पतझड़ बहारों में, मैं ना कभी डगमगाऊँ।
पानी के प्यासे को तकदीर ने जैसे जीभर के अमृत पिलाया॥
ऐसा ही सुख .....॥

जब लगे कि हमारे ईर्षालु बढ़ रहे हैं तो।
मानना कि हम मार्ग में सफल हो रहे हैं॥

हर मुस्काती सुबह शाम लिये होती है।
जीवन की पीठ पर मौत लिखी होती है॥

152.

तेरे द्वार खड़ा भगवान, भगत भर दे रे झोली।
तेरा होगा बड़ा एहसान, के जुग-जुग तेरी रहेगी शान॥
भगत भर दे .....॥
डोल उठी है सारी धरती देख रे, डोला गगन है सारा,
भीख माँगने आया तेरे घर, जगत का पालनहारा रे।
मैं आज तेरा मेहमान, कर ले रे मुझसे जरा पहचान॥
भगत भर दे .....॥
आज लुटा दे रे सर्वस अपना, मान ले कहना मेरा,
मिट जायेगा पल में तेरा, जनम जनम का फेरा।
तू छोड़ सकल अभिमान, अमर कर ले रे तू अपना दान॥
भगत भर दे .....॥

153.

है ये पावन भूमि, यहाँ बार-बार आना।
प्रभु पार्श्व के चरणों में, आकर के झुक जाना॥
भटके हुए राही को, तुम राह दिखाते हो।
जो तेरी शरण आये, उसे पार लगाते हो॥
आये हैं तेरी शरणे, खाली न लौटाना।
है ये पावन .....॥
संकट में तुम्हें जिनवर जिसने भी पुकारा है।
दिया सबको सहारा है, हर काम सँवारा है॥
हम पर भी दया करके, सब बिगड़ी बना देना।
है ये पावन .....॥

154.

दुख से घबराओ नाहीं मेरे साथी, ये जीवन में मानव का श्रृंगार है।
सुख में व्यसन प्रमाद भरे, दुख पापों से करता खबरदार है॥
सुख से मिटता यदि ये आवागमन, तीर्थंकर नहीं तजते संसार को।
सुख के साधन सभी छोड़ जाए वन में, मोक्ष पाने का दुःख भी तो आधार है॥

दुख से घबराओ नाहीं.....॥

जो पुरुषार्थ से मुख मोड़े नहीं, वो सुख की कसौटी पे उतरे खरा।
दुख की ज्वाला में पड़कर जो स्थिर रहे, सुख पाने का सच्चा वो हकदार है॥

दुख से घबराओ नाहीं.....॥

सुख में रहते हैं देखो सब ही सगो, पास आते नहीं जब दुःख आ पड़े।
तुम देखो परख कर दुख में उन्हें, साहस, धरम, मित्र, नाज है।

दुख से घबराओ नाहीं.....॥

पाप कर्मों का होता है जब जब उदय, भोगना दुःख पड़ता है उस ही समय।
ये ऋषि और मुनि कहते आये सभी, अच्छा करम करो सबको हितकार है॥

दुख से घबराओ नाहीं.....॥

कदर कर वक्त की, कि वक्त बड़ा बेजोड़।
वरना जिन्दगी है क्या, एक अंधा मोड़ है॥

155.

जो राह चुनी तूने, उसी राह पे राही चलते जाना रे।
हो कितनी भी लंबी रात दिया बन जलते जाना रे॥
कभी पेड़ का साया, पेड़ के काम ना आया,
सेवा में सभी की, उसने जनम बिताया।
कोई कितने ही फल तोड़े, उसे तो है फलते जाना रे॥

उसी राह पे राही.....॥

तेरी अपनी कहानी, ये दर्पण बोल रहा है,
भीगी आँख का पानी, हकीकत खोल रहा है।
जिस रंग में ढाले वक्त, मुसाफिर ढ़लते जाना रे॥

उसी राह पे राही.....॥

जीवन के सफर में, ऐसे भी मोड़ हैं आते,
जहाँ चल देते हैं, अपने भी तोड़ के नाते।
कहीं धीरज छूट न जाये, तू देख संभल के जाना रे॥

उसी राह पे राही.....॥

विषयों में फँस गया तो, दुर्गति होगी तुम्हारी।
सतगुरु कहें शिवमार्ग पर, चलना ही पड़ेगा॥

उसी राह पे राही.....॥

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है॥

156.

चाह मुझे है दर्शन की, वीर चरण स्पर्शन की।
वीतराग छवि प्यारी है, जन-जन के मन भायी है।
मूरत मेरे भगवन की॥
वीर चरण .....॥
समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की राह दिखाती है।
नासा दृष्टि लखो प्रभु की॥
वीर चरण .....॥
हाथ पे हाथ रखे ऐसे, करना कुछ ना रहा जैसे।
देख दशा पद्मासन की॥
वीर चरण .....॥
कुछ भी नहीं शृंगार किए, हाथ नहीं हथियार लिए।
फौज भगाई कर्मन की॥
वीर चरण .....॥
जो शिव आनंद चाहें हम, प्रभु सम ध्यान लगायें हम।
विपत्ति हरें भव भटकन की॥
वीर चरण .....॥

श्रमण सभ्यता का रहा, सदा यही परिणाम।
जीवन में बस ज्योति हो, मरने पर निर्वाण॥

157.

करुणासागर भगवान भव पार लगा देना।
तूफां हैं बहुत भारी मेरी नाव बचा लेना॥
मोही बनकर मैंने अब तक जीवन खोया,
अपने ही हाथों से काँटो का बीज बोया।
अब शरण तेरी आया दुख जाल हटा देना॥
करुणासागर भगवान.....॥
मैंने चहुँ गतियों में बहु कष्ट उठाया है,
लख चौरासी फिरते सुख चैन नहीं पाया।
दुखिया हूँ भटकता हूँ प्रभु लाज बचा देना॥
करुणासागर भगवान.....॥
भगवान तेरी भक्ति से संकट टल जाते हैं,
अज्ञान तिमिर मिटवा सुख अमृत पाते हैं।
चरणों में खड़ा प्रभुवर मुझे राह बता देना॥
करुणासागर भगवान.....॥

158.

मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे।
मंदिर जाऊँ, दर्शन पाऊँ-2, श्रद्धान बढ़ता है धीरे-धीरे॥
लगन बढ़ती है धीरे-धीरे॥
ईर्ष्या छोडूँ, समता धारूँ-2, कषाय घटती है धीरे-धीरे॥
इच्छा रोकूँ, संयम धारूँ-2, करम कटते हैं धीरे-धीरे॥
परिग्रह त्यागूँ, दीक्षा धारूँ-2, तपस्या बढ़ती है धीरे-धीरे॥
सब जीवों से क्षमा धारकर-2,शिवपुर पहुँचूँ मैं धीरे-धीरे॥